



उग्रप्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती

ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 21 अंक 4

कुल पृष्ठ-8

28 मई से 3 जून, 2026

दयानन्दाब्द 202

सृष्टि सम्वत् 1960853127

सम्वत् 2083

ज्ये.शु-13

स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, रोहतक में वैदिक विरक्त मण्डल का चिन्तन एवं सिद्धान्त प्रशिक्षण शिविर भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न
संन्यासी, वानप्रस्थी एवं नैष्ठिक ब्रह्मचारियों ने उत्साह के साथ लिया भाग
शिविर का उद्घाटन वैदिक विरक्त मण्डल के अध्यक्ष स्वामी प्रणवानन्द जी ने की
सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी की रही गरिमामयी उपस्थिति

एक लाख युवाओं को आर्य समाज से जोड़ने का लिया गया संकल्प
रोहतक के टिटौली में आयोजित होगा - युवा संकल्प एवं सम्मान समारोह



स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, रोहतक में दिनांक 23 मई, 2026 को वैदिक विरक्त मंडल के तत्वावधान में आयोजित चिन्तन, साधना एवं सिद्धान्त प्रशिक्षण शिविर में वैदिक धर्म, राष्ट्र निर्माण एवं युवा जागरण को लेकर महत्वपूर्ण विचार-विमर्श किया गया। शिविर की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने की। शिविर का विधिवत उद्घाटन 21 मई को प्रातः 10 बजे वैदिक विरक्त मण्डल के अध्यक्ष स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी ने की। उन्होंने अपने सम्बोधन में आर्य संन्यासियों एवं आर्य वानप्रस्थियों के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा निर्दिष्ट नियमों का पालन करने पर विशेष बल दिया। उन्होंने कहा कि हमारा आचरण एवं व्यवहार वैदिक सिद्धान्त के अनुरूप होना चाहिए। कोई भी ऐसा कार्य न करें जिससे सिद्धान्त का उल्लंघन होता हो या लोगों में गलत संदेश जाता हो। हमें प्रतिदिन प्रातः एवं सायं सन्ध्या, ध्यान एवं साधना अवश्य करनी चाहिए। हम सभी को कर्मकाण्ड एवं व्याख्यान देने का भी



अभ्यास करना आवश्यक है। जब हम आर्य समाज के प्रचार-प्रसार के लिए जायें तो हम अपना प्रभाव छोड़ने की कोशिश करें न कि प्रभाव कम करने की। इसके लिए आवश्यक है कि हम स्वाध्याय करें और अपनी ज्ञान सम्पदा को और अधिक बढ़ाएँ। स्वामी प्रणवानन्द जी ने संन्यासियों के लिए विशेष रूप से कहा कि हमें मान-अपमान से ऊपर उठकर समाजसेवा की भावना से कार्य करना चाहिए।

शिविर में आर्य समाज के महान नेता, स्वतंत्रता आंदोलन के प्रेरणास्त्रोत तथा गुरुकुल परंपरा के पुनरुद्धारक स्वामी श्रद्धानंद जी के बलिदान शताब्दी वर्ष को ऐतिहासिक एवं वैश्विक स्वरूप में मनाने का निर्णय लिया गया। संतों एवं विद्वानों ने कहा कि स्वामी श्रद्धानंद जी का जीवन राष्ट्रभक्ति, वैदिक संस्कृति, शिक्षा एवं सामाजिक जागरण का अनुपम उदाहरण है तथा नई पीढ़ी को उनके

आदर्शों से जोड़ना वर्तमान समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

चिन्तन बैठक के उपरान्त निर्णय लिया गया कि बलिदान शताब्दी समारोह को अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के रूप में आयोजित किया जाएगा। यह विराट आयोजन 9, 10 एवं 11 अक्टूबर 2026 को हरिद्वार में उसी ऐतिहासिक भूमि पर सम्पन्न होगा, जहाँ स्वामी श्रद्धानंद जी ने प्रथम गुरुकुल की स्थापना की थी। सभी विरक्तों ने विश्वास व्यक्त किया कि यह आयोजन वैदिक चेतना के वैश्विक जागरण का माध्यम बनेगा। सम्मेलन में भारत सहित लगभग 36 देशों के प्रतिनिधियों, 500 गुरुकुलों के ब्रह्मचारियों तथा एक लाख से अधिक आर्य कार्यकर्ताओं की सहभागिता सुनिश्चित करने का लक्ष्य रखा गया है।

बैठक में आगामी एक वर्ष के भीतर एक लाख नए युवाओं को आर्य समाज से जोड़ने का ऐतिहासिक संकल्प भी लिया गया। इसके लिए सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद, आर्य वीर दल, आर्य युवा समाज, आर्य वीरांगना दल एवं सार्वदेशिक आर्या युवती परिषद के माध्यम से युवा चरित्र निर्माण शिविर, युवा संगोष्ठियाँ, नशा मुक्ति अभियान एवं युवा जागरण कार्यक्रम व्यापक स्तर पर संचालित किए जाएंगे।

स्वामी संपूर्णानंद जी ने कहा कि चरित्रवान, राष्ट्रनिष्ठ एवं संस्कारित युवा ही भारत के उज्ज्वल भविष्य का आधार हैं। गुरुकुल परंपरा भारतीय संस्कृति की आत्मा है, जिसके संरक्षण एवं विस्तार हेतु संगठित प्रयास समय की आवश्यकता हैं।

शिविर में यह भी निर्णय लिया गया कि 12 जून 2026 को रोहतक के पूर्व सांसद एवं आर्य नेता स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज की 20वीं पुण्यतिथि पर "युवा संकल्प एवं सम्मान समारोह" आयोजित किया जाएगा। इस अवसर पर हरियाणा प्रदेश के आर्य कार्यकर्ताओं के अतिरिक्त शिक्षा, संस्कृति एवं समाज सेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान देने वाले व्यक्तियों का सार्वजनिक अभिनंदन किया जाएगा।

अगले पृष्ठ पर जारी



सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

पशु धन की सुरक्षा

- महात्मा गोपाल स्वामी सरस्वती

किसी भी राष्ट्र का पशु-धन, उस राष्ट्र की राष्ट्रीय सम्पत्ति है। पशुधन की उन्नति और विकास में राष्ट्रोन्नति निहित है। भारत की यह विडम्बना है कि इस देश में जंगली और हिंसक पशुओं की रक्षा के लिए राष्ट्रीय स्तर पर कानून है, परन्तु घरेलू और उपयोगी पशुओं की रक्षा के लिए कोई कानून नहीं। उनके जीवन के लिए कोई सुरक्षा नहीं।

जंगली पशुओं की सुरक्षा के लिए कितनी ही परियोजनायें, जैसे Tiger Project, Gir Lion Project आदि हैं, परन्तु घरेलू पशु जिनमें गाय, बैल, सांड, बकरा, बकरी भेंड़, ऊँट, ऊँटनी, भैंस, भैंसा सभी उपयोगी पशु आ जाते हैं, उनके स्वास्थ्य और जीवन रक्षा के लिए न कोई कानून है, न कोई व्यवस्था है। सरकारी पशु चिकित्सालयों की स्थिति जनता के लिए कार्यरत सरकारी अस्पतालों से भी बदतर है। पशु चिकित्सालय जो भी हैं, वे शहरों में हैं जबकि अधिकांश घरेलू पशु ग्रामीण अंचलों में पाले जाते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में पशुओं की चिकित्सा की कोई सुविधा नहीं।

यदि आप किसी भी महानगर या राज्य की आगामी पंचवर्षीय योजना का प्रारूप अध्ययन करें, तो पायेंगे कि वहाँ वधशाला के आधुनिकीकरण या नई आधुनिक वधशाला या चमड़ा उतारने के कारखाना लगाने का तो प्रावधान है, पर आधुनिक पशुशाला या गौशाला स्थापित करने की कोई बात भी नहीं है। कोई अर्थशास्त्री यह नहीं सोचता कि यदि पशु पाले नहीं जायेंगे, तो वध-शालाओं के लिए भी कहाँ से उनकी पूर्ति होगी? राजनेताओं और अर्थशास्त्रियों का ध्यान, केवल माँस के उत्पादन बढ़ाने पर है, जिसका मुस्लिम देशों को निर्यात करके विदेशी मुद्रा कमाई जा सके। चमड़ा और माँस निर्यात करने वाले देशों में भारत का अग्रणी स्थान बना रहे। वेशक देश पशु-धन के मामले में निर्धन हो जाये, यही सोच राजनीतिक और सरकारी तन्त्र में सर्वत्र विद्यमान दिखाई देती है।

जनसंख्या की दृष्टि से भारत को हिन्दू बहुसंख्यक देश कहा जाता है, पर ‘वोट बैंक’ की राजनीति के कारण राज्य इस देश में अल्प-संख्यक की सोच और उनकी विचारधारा करती है।

इसी ‘बकराईद’ के पर्व पर माँसाहारी व्यंजनों को खाने और खिलाने के लिए एक करोड़ पशुओं का वध अकेले भारत देश में हो गया। किसी मीडिया ने इस स्थिति पर शोक प्रकट किया? क्या एक करोड़ पशु देश में एक दिन में पैदा होकर उस स्थिति में पहुँच सकेंगे जिस स्थिति में वध किये जाने वाले पशु थे?

यह भारत देश का दुर्भाग्य और विडम्बना ही है, कि जहाँ एक ओर सम्पूर्ण विश्व में शाकाहार का आन्दोलन जोर पकड़ रहा है, भारत में माँसाहार पनप रहा है। चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में यह सिद्ध हो चुका है, कि माँसाहार मनुष्य का भोजन नहीं है, और यह कि मनुष्यों की बहुत सी बीमारियों और व्याधियों का कारण माँसाहार ही है, फिर भी भारत में उतने भी उपाय माँसाहार को प्रतिबन्धित करने के लिए नहीं किये जा रहे, जितने धूम्रपान को प्रतिबन्धित करने के लिए किये गये हैं।

पूरे विश्व में समस्त उच्च कोटि के विचारक, चिन्तक और वैज्ञानिक एवं चिकित्सक, जो भी जहाँ हैं, एक मत से शाकाहार का अनुमोदन करते और माँसाहार को त्याज्य मानते हैं। परन्तु भारत का दुर्भाग्य कि अल्पसंख्यक तो अल्पसंख्यक, हिन्दुओं में भी, आर्यों तथा वैष्णव मत के अनुयाइयों को छोड़कर, शैव और शाक्त मतावलम्बी (अर्थात् शिवजी और देवी माता के भक्त) तथा अपने आपको दलितों के मसीहा कहलाने वाले नेता एवं तांत्रिक स्वयं माँसाहार करते हैं और उसकी वकालत भी करते हैं। तांत्रिकों का कोई भी अनुष्ठान बिना पशु बलि के पूरा नहीं होता। शाकाहारी हिन्दू समाज भी जातिवाद के कारण इतना बंटा हुआ है, जैसे कहीं ब्राह्मण समाज है, कहीं वैश्य समाज, कहीं कोई बिरादरी, कहीं कोई बिरादरी, कि कभी एकजुट होकर एक स्वर में अपनी सही बात भी नहीं रख पाते।

अतः, हे आर्यों! यह जिम्मेदारी केवल तुम पर आती है, जो अपने-आप को वेद भक्त और महर्षि दयानन्द का उत्तराधिकारी कहते हो, कि समझाओ देशवासियों को और केन्द्र तथा राज्यों में सत्तारूढ़ राजनेताओं एवं शासनाधिकारियों को, जो दयानन्द ने कभी कहा था “कि गौ आदि पशुओं का नाश होने से राजा और प्रजा दोनों का नाश हो जाता है” अतः पशुओं की सुरक्षा में ही राष्ट्र की रक्षा है।

जब भारत आजाद हुआ तो 40 करोड़ आबादी वाले इस देश में दूध देने वाले पशुओं (गाय, भैंस, बकरी, भेंड, ऊँटनी आदि) की संख्या 16 करोड़ थी।

पृष्ठ 4 का शेष

स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, रोहतक में वैदिक विरक्त मण्डल का चिन्तन एवं सिद्धान्त प्रशिक्षण शिविर भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न

इस समारोह में पद्मश्री सम्मानित डॉ. सुकामा, विश्ववारा कन्या गुरुकुल, रुड़की, रोहतक की संचालिका, वैदिक विदुषी आचार्या सूर्यादेवी कन्या गुरुकुल शिवगंज, राजस्थान के अतिरिक्त विभिन्न संन्यासी, भजनोपदेशक, युवा संगठनकर्ता एवं युवा वीरांगनाओं को भी सम्मानित किया जाएगा।

अपने संबोधन में स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि आर्य समाज को पुनः समाज परिवर्तन की अग्रणी शक्ति बनाने हेतु युवाओं को वैदिक विचारधारा से जोड़ना अत्यंत आवश्यक है। आने वाले समय में देशभर में वैदिक संस्कृति, राष्ट्र निर्माण, शिक्षा जागरण एवं सामाजिक सुधार के लिए व्यापक योजनाएँ संचालित की जाएँगी। इसके लिए राष्ट्रीय स्तर पर वैदिक संस्कृति रक्षा अभियान, जन-चेतना यात्रा निकाली जायेगी जिसमें सैकड़ों संन्यासी, वानप्रस्थी एवं नैष्ठिक ब्रह्मचारी, भजनोपदेशक आदि सम्मिलित होंगे। वैदिक विरक्त मण्डल

आज जब भारत की जनसंख्या 100 करोड़ से ऊपर है, दूध देने वाले पशुओं की संख्या घटकर केवल 12 करोड़ रह गई है। दुधारू पशुओं की कई प्रजातियाँ तो लुप्त प्रायः हो गई हैं। कृत्रिम गर्भाधान की पशुओं के प्रति अपनायी जाने वाली प्रक्रिया जो इतनी असभ्य और अशिष्ट है, उसके कारण, और पशुओं में फैलती संक्रामक बीमारियों के कारण, (जिनकी रोकथाम का कोई समुचित प्रबन्ध नहीं है) पशु दिन-प्रतिदिन मरते जाते हैं। अलावा इसके जो पशु-वध प्रतिदिन लाखों की संख्या में देश में माँस की पूर्ति के लिए होता है, हजारों की संख्या में पशुओं की तस्करी पाकिस्तान और बांग्लादेश को हो जाती है। दिन में सौदे धन के लाम्बी पशु-पालिक करते हैं, और रात्रि में पशु सीमा पर हांक दिये जाते हैं, जिन्हें प्रातः को पकड़कर वधशाला में ले जाया जाता है।

देश में दूध की बढ़ती मांग को भ्रष्ट व्यापारी कृत्रिम दूध बनाकर पूरा कर रहे हैं, और धन बटोर रहे हैं। न शुद्ध दूध है, न घी है, और न शुद्ध मावा देश में उपलब्ध है।

जो देश इस तथ्य के लिए प्रसिद्ध था, कि यहाँ दूध और घी की नदियाँ बहती थी, वहाँ दूध आज जिस भाव बिक रहा है, वह सब को विदित है। आबादी की दृष्टि से दूध की माँग बढ़ती रही और दूध देने वाले पशु कटते या मरते रहे तो कोई आश्चर्य नहीं, कि अगले 5-10 वर्षों में दूध का भाव 100 रुपये प्रति लीटर न हो जावे। केवल औषधि आदि के लिए ही दूध उपलब्ध होगा। न छोटे बच्चों को और न वृद्धों को पीने को दूध होगा, तो क्या होगा देश का? यज्ञ हवन का भी कोई लाभ पर्यावरण की शुद्धता के लिए नहीं होगा, यदि आहुति शुद्ध घृत की नहीं होगी। वेद में आया “..... घृतेन बोधय” (यजु. 3/1-12/30, ऋग्वेद 8/44/1) कैसे यज्ञ कुण्ड में और इस पिण्ड में अग्नि का वर्धन होगा, जब घृत के स्थान पर केवल वनस्पति तेल या रिफाइनड ऑयल ही बाजार में उपलब्ध होगा?

मात्र नारे लगाने से कि “गौ माता की जय” या “गौ माता की रक्षा हो” बात नहीं बनने वाली। गौ संवर्धन (जिसमें घरेलू पशुओं का संरक्षण सन्निहित है) का जो कार्य योगीराज श्रीकृष्ण जी ने द्वापर युग में किया था उसी कार्य को इस कलियुग में क्रियान्वयन करने की आवश्यकता है। दूधारू पशु सड़कों, राजमार्गों या खेतों में मार खाते न फिरे, उसके लिए उनके आवास, आराम और आहार की समुचित व्यवस्था होनी चाहिए जिससे उनको आहार में “हरा चारा” समुचित मात्रा में मिल सके।

पशु धन के विकास हेतु कार्य योजना :- उन्नीसवीं शताब्दी की महती उपलब्धि थी महर्षि स्वामी दयानन्द का आविर्भाव और आर्य समाज की स्थापना तथा विस्तार। बीसवीं शताब्दी की उपलब्धि थी अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि के लिए आर्य समाज द्वारा संस्थागत रूप में स्कूल, गुरुकुल तथा अन्य शिक्षण संस्थायें खोलना। शिक्षा के महत्व को और प्रत्येक बालक-बालिका को शिक्षित करने की आवश्यकता को देश की केन्द्र और राज्य सरकारों ने अब समझ लिया है। अतः इस इक्कीसवीं शताब्दी में आर्य समाज का लक्ष्य होना चाहिए - देश के पशुधन का संरक्षण और विकास। इसके लिए उचित होगा कि संस्थागत रूप में आर्य समाज निम्न कार्य योजना को क्रियान्वयन करने का पूर्ण प्रयास करें।

वैदिक विधि से होने और कराये जाने वाले विवाह संस्कारों में दान-दहेज के बजाय ‘कन्या दान’ से पूर्व केवल ‘गोदान’ ही संस्कार विधि के अनुसार वास्तविक रूप में कन्या पक्ष की ओर से वर-पक्ष को करवाया जाये। आर्य पुरोहितों को यह दायित्व लेना होगा। कन्या अपने पतिगृह में गौ के साथ ही प्रवेश करे। यदि वर या वर-पक्ष गाय-पालन में स्थानाभाव या अन्य किसी कारण से असमर्थ हों, तो वेशक गाय को स्थानीय गौशाला को दान कर दिया जावे और यथा शक्ति गौशाला को गोपालन हेतु आर्थिक सहयोग प्रतिमाह या प्रतिवर्ष दिये जाने की वचन-बद्धता हो।

देश में प्रत्येक ग्रामीण क्षेत्र की आर्य समाज अपने-अपने क्षेत्र में गौशाला या पशुशाला स्थापित करें, जहाँ पर पशुओं के आवास, आराम, आहार और जरूरत पड़ने पर पशु चिकित्सा की समुचित व्यवस्था हो। प्रत्येक आर्य समाज के साथ सम्बद्ध गौशाला या पशुशाला हो। प्रत्येक आर्य सदस्य को शुद्ध दूध लागत मूल्य पर प्राप्त हो सके, यह लक्ष्य होना चाहिए। यदि दूध का उत्पादन इतना हो, कि घृत भी बनाया जा सके, तो और भी अच्छा है। यज्ञ-हवन में आहुतियाँ आर्य समाज की अपनी ही गौशाला के दूध से बने घृत से पड़नी चाहिए।

नगरों या महानगरों में बड़ी आर्य समाजें मिलकर या अपने बल-बूते पर ही एक सहयोगी संस्था का निर्माण करें, जिसका नाम हो गोकृष्यादिरक्षिणी सभा। प्रत्येक जिला सभा का यह दायित्व होना चाहिए कि नगरों में जितनी समाजें हैं, उतनी ही कम से कम गोकृष्यादिरक्षिणी सभा गठित हों। इन सभाओं का विधान, नियम, उपनियम सब महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपनी अन्तिम कृति “गौकरुणानिधि” में निर्धारित कर दिये हैं। उन्हीं के आधार पर इन सभाओं का गठन किया जा सकता है। इन सभाओं का यह दायित्व होगा कि वे नगर निगमों की स्वीकृति से गौशाला व पशुशाला के लिए पर्याप्त भूमि का अधिग्रहण कर गौशालायें/पशुशालायें आधुनिक ढंग पर स्थापित करेंगी, जिनमें जहाँ एक ओर पशुओं के आवास, आराम, आहार, चिकित्सा की सब आधुनिक सुविधायें तो होंगी ही, दूध से निर्मित उत्पादों का निर्माण, वितरण तथा विक्रय भी होगा, जैसे घी, मावा, पनीर, मट्ठा, दही आदि। लक्ष्य यह होना चाहिए कि प्रत्येक गौशाला आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर हो।

आर्य समाज की जो सभायें प्रादेशिक या सार्वदेशिक स्तर पर कार्यरत हैं, उनको इतने कार्य तो अपने-अपने स्तर पर पूर्ण निष्ठा और सक्रियता से करने और करवाने ही चाहिए-

1. पशुपालन और डेयरी को उद्योग का दर्जा दिया जावे। जो सरकारी सुविधायें नये उद्योग को स्थापित करने में मिलती हैं, वे सब सुविधायें पशुपालन और डेयरी उद्योग को प्राप्त हों।

2. पशुपालन और डेयरी उद्योग को बैंकों से ऋण प्राप्त करने में प्राथमिकता और सस्ती ब्याज दरों की सुविधा हो।

3. किसी भी समुदाय के महत्वपूर्ण पर्व/त्योहार पर मद्य और माँस दोनों की उत्पादन तथा क्रय-विक्रय प्रतिबन्धित हो। ‘गांधी’, ‘गौतम बुद्ध’ और ‘महावीर’ के देश में किसी भी समुदाय के महत्वपूर्ण पर्वों/त्योहारों पर “पशु हिंसा” किसी भी सूरत में नहीं होना चाहिए। सभी को “अहिंसा परमो धर्मः” के अनुसार धर्म पूर्वक जीवन-यापन करना चाहिए।

4. जिस प्रकार जंगली और हिंसक पशुओं की सुरक्षा के लिए कानून है उसी प्रकार का कानून उपयोगी घरेलू पशुओं के लिए होना चाहिए।

5. जिस प्रकार प्राणी (मनुष्यों) में आत्मा है, उसी प्रकार पशुओं में भी आत्मा है। जिस प्रकार मनुष्य की हत्या दण्डनीय अपराध है, उसी प्रकार उपयोगी घरेलू पशुओं की हत्या भी दण्डनीय अपराध की श्रेणी में होना चाहिए। प्रत्येक जीवित प्राणी को अपनी आयु तक जीवित रहने का संवैधानिक एवं मौलिक अधिकार हो, चाहे वह मनुष्य हो या उपयोगी पशु। घरेलू और उपयोगी पशु हमेशा अपने मालकि के वफादार रहे हैं, जबकि इस मनुष्य रूपी प्राणी ने, अपने ही लोगों से बेवफाई के रिकार्ड बनाये हुए हैं, अतः अधिकारों के मामले में बेवफा को बावफा पर तरजीह (वरीयता) देना न्यायसंगत नहीं। यहाँ पर भारत के उच्चतम न्यायालय के एक पूर्व न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्रीकृष्ण अय्यर के कथन को उद्धृत करना ठीक होगा जिन्होंने एक पशु संरक्षण गोष्ठी में स्वयं कहा था, कि “पशुओं को भी जीने का जन्मसिद्ध अधिकार है। मेरी राय में पशु हत्या और मनुष्य हत्या में कोई भेद नहीं है।” आर्य समाज की सभाओं के शीर्षस्थ नेता, जिन्हें कोर्ट/कचहरी में जाने का बहुत शौक है, पशु धन की सुरक्षा पर सर्वोच्च न्यायालय में एक याचिका तो डाल कर देखें, ऋषिवर दयानन्द की गौकरुणानिधि पुस्तक में दी गई उक्तियाँ ही सफलता की प्राप्ति में पर्याप्त होंगी, मात्र कानूनी उक्तियों के लिए ही पुरुषार्थ करना होगा। वैसे भी भारत के संविधान की धारा 49 का स्पष्ट निर्देश है -

“राज्य कृषि और पशुपालन को आधुनिक और वैज्ञानिक प्रणालियों द्वारा संचालित करने का प्रयास करेगा, विशेषतः गाायों तथा अन्य दुधारू और वाहक पशुओं के परिरक्षण और सुधार के लिए और उनके बध को प्रतिबन्धित करने के लिए कदम उठायेगा।”

आर्य समाज संस्थागत रूप में अपने प्रवर्तक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती की अन्तिम कृति ‘गौकरुणानिधि’ की भावना के अनुरूप तथा यजुर्वेद के प्रथम अध्याय के प्रथम मन्त्र के अनुरूप ‘पशून पाहि’ पशुओं की रक्षा का दायित्व इस इक्कीसवीं शताब्दी में आगामी पीढ़ी की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए ले, यही इस अकिंचन, क्षुद्र किन्तु विनम्र संन्यासी की अन्तिम इच्छा है।

प्रशिक्षण का कार्यक्रम चलता था। सभी विरक्तों को संन्ध्या, यज्ञ, आर्य समाज के नियम, आर्य समाज की प्रमुख मान्यताएं एवं आर्य समाज की उपलब्धियों व इतिहास के सम्बन्ध में विस्तार से बताया गया और उसके पश्चात् परीक्षा भी ली गई। अधिकतर संन्यासी व वानप्रस्थी व्याख्यान देने, यज्ञ करने कराने में निष्णात पाये गये। शिविर का समापन वैदिक यज्ञ एवं सामूहिक संकल्प के साथ सम्पन्न हुआ। शिविर का पूरा संयोजन युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी ने की तथा भोजन आदि की पूरी व्यवस्था बहन प्रवेश आर्या ने संभाली। श्री ऋषिराज शास्त्री, शाहिल आर्य एवं पूजा आर्या ने भी व्यवस्था में अपना पूरा सहयोग दिया। सभी शिविरार्थियों को विधिवत प्रमाण पत्र भेंट किये गये तथा 4 महीने के बाद पुनः शिविर आयोजित करने का निर्णय भी लिया गया।

योग की जीवन दृष्टि

- डॉ. रघुवीर वेदालंकार

पतंजलि मुनि ने योगदर्शन के द्वितीय सूत्र 'योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः' में ही योग का स्वरूप बतला दिया है। व्यास जी ने इसे 'योगः समाधिः' कहकर इसे बिल्कुल ही स्पष्ट कर दिया है तथापि योगदर्शन केवल ध्यान तथा समाधि का ही शास्त्र नहीं है अपितु हमारे व्यावहारिक जीवन के लिए भी वह उत्तना ही उपयोगी एवं आवश्यक है जितना कि समाधि के लिए यह शास्त्र व्यक्ति के व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन को पूर्णतः शुद्ध एवं नियमित करने वाला है। इसी अभिप्राय से पतंजलि मुनि ने योग को आठ अंगों में विभक्त किया है। योग के इन आठों अंगों पर सावधानीपूर्वक विचार करने से तो ऐसी ही प्रतीति होती है कि इनके द्वारा पतंजलि व्यक्ति एवं समाज के जीवन को पूर्णतः नियन्त्रित करना चाह रहे हैं।

काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि से ग्रस्त होकर ही व्यक्ति आपराधिक जीवन व्यतीत करता है। इनसे उसकी चित्तवृत्तियाँ बहिर्मुख होती हैं। पतंजलि इन सभी वृत्तियों के निरोध का मार्ग हमारे सामने प्रस्तुत करते हैं। यह निरोध केवल समाधि के लिए ही नहीं, अपितु सांसारिक जीवन में भी होना चाहिए।

मन की वृत्तियों के अधीन होकर ही व्यक्ति अपने सभी कार्य करता है। यदि उसकी ये वृत्तियाँ अमर्यादित तथा भोगोन्मुखी होगी तो उसके कर्म भी उसी प्रकार के होंगे। यदि चित्तवृत्तियाँ शान्त एवं नियमित होंगी तो इनका प्रभाव व्यक्ति के दैनिक जीवन एवं उसके कार्यों पर भी पड़ेगा।

व्यक्ति प्रायः असत्य, हिंसा स्तेय, राग-द्वेष, ईर्ष्या मत्सर आदि से ग्रस्त होकर भी अपने कार्यों में प्रवृत्त होता है इनसे उसका जीवन पूर्णतः उच्छृंखलित स्वार्थमय तथा पाशविक बन जाता है। उक्त वृत्तियों पर अंकुश लगाकर व्यक्ति के जीवन को नियमित एवं पवित्र करने के लिए ही पतंजलि ने योगदर्शन के प्रारम्भ में ही यम-नियमों का उल्लेख किया है।

यम पद 'यमु उपरमे' धातु से बना है। इसका प्रयोजन ही उपरत करना है। व्यक्ति को असत्य हिंसा, चोरी, दुराचार आदि अनैतिक एवं समाज विरोधी कार्यों से उपरत करना यमों का उद्देश्य है। यम पांच हैं - अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य तथा अपरिग्रह। इनमें अहिंसा प्रमुख है। यदि मेरे किसी भी कार्य से वचन से किसी प्राणी को किसी प्रकार का कष्ट हो तो वह हिंसा ही है। हिंसा का अर्थ किसी के प्राण लेना ही नहीं है अपितु वाणी अथवा कार्य से किसी का अप्रिय आचरण करना भी हिंसा ही है। इसके अनेक प्रकार तथा क्षेत्र हो सकते हैं। उन्हें दृष्टि में रखकर ही व्यास जी ने हिंसा के 80 भेद किए हैं इनमें कृत कारित तथा अनुमोदित भेद प्रमुख हैं। व्यास जी अहिंसा का स्वरूप बतलाते हुए कहते हैं - तत्राहिंसा सर्वथा सर्वदा सर्वभूतानामनाभिद्रोहः। यो. सू. 2/30 व्या. भा.

व्यास जी के अनुसार तो अहिंसा की सिद्धि के लिए ही दूसरे यमों का प्रतिपादन किया गया है इस प्रकार अहिंसा ही प्रमुख यम है।

अहिंसा को सर्वप्रमुख कहने का कारण यह है कि हमारे जीवन में अनेक रूपों में हिंसा व्याप्त रहती है। किसी को कटु वचन कहना भी हिंसा है किसी का किसी प्रकार से अपकार या अपमान आदि करना भी उसकी हिंसा ही है। हिंसा ईर्ष्या, द्वेष तथा विरोध पर आधारित होती है। इनके कारण ही व्यक्ति अपने विरोधी की वैचारिक या शारीरिक हानि तथा हत्या तक करता है। यह हिंसा ही है। इसका एक स्वरूप यह है कि धन की तृष्णा में व्यक्ति अनेक प्रकार के अनीति पूर्ण कार्य करता है दूसरों को धोखा देता है मिथ्या बोलता है तथा पर धन हानि की चेष्टा करता है। यह सब हिंसा का ही व्यापार है क्योंकि ऐसे आचरण से किसी न किसी को तो कष्ट होता है तथा कष्ट देना ही हिंसा है। इसे ही व्यास जी ने उपघात कहा है हिंसा के द्वारा ही मांसाहारी प्राणी मांस प्राप्त करते हैं। यह तो स्पष्ट रूप में ही हिंसा है।

अहिंसा का सामाजिक एवं राष्ट्रीय क्षेत्र में भी बहुत योगदान है। आज समाज एवं राष्ट्र में सर्वत्र हिंसा व्याप्त है। यह हिंसा धर्म, जाति तथा राष्ट्रीयता के आधार पर भी की जाती है। एक धर्म वाला दूसरे धर्म वाले पर अत्याचार करता है उसका उत्पीड़न यहाँ तक कि हत्या भी कर देता है। इसी प्रकार एक जाति वाले दूसरी जाति वाले को नष्ट करना चाहते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी ऐसा होता है। इस प्रकार हिंसा की वृत्ति के कारण ही जातीय, राष्ट्रीय तथा धार्मिक संघर्ष उत्पन्न होते हैं। कभी-कभी तो ये उन्माद का रूप भी धारण कर लेते हैं। अहिंसा के द्वारा ही इन सब पर नियंत्रण पाया जा सकता है। अहिंसा व्यक्ति को वैरभाव से सर्वथा रहित कर देती है। अहिंसक व्यक्ति के मन में प्रतिशोध की भावना नहीं हो सकती। पतंजलि तो कहते हैं कि अहिंसक व्यक्ति की सन्धि में रहने वाले प्राणी भी वैरभाव छोड़ देते हैं।

(2) सत्य :- अहिंसा के समान सत्य भी वैयक्तिक एवं सामाजिक जीवन के लिए अनिवार्य है। सामाजिक व्यक्ति पग-पग पर असत्य का व्यवहार करते हैं। सत्य का क्षेत्र केवल बोलने तक ही सीमित नहीं है अपितु यह तो ऐसा तत्त्व है जो हमारे सम्पूर्ण जीवन में व्याप्त रहता है। किसी के साथ छल प्रपंचपूर्वक किया गया गलत व्यवहार भी असत्य ही कहलायेगा। की गई प्रतिज्ञा को समय पर पूर्ण न करना भी असत्य ही है।

व्यास जी ने असत्य का सम्बन्ध न केवल मिथ्या बोलने से ही माना है अपितु हमारे सत्य वचन से भी यदि प्राणियों का उपघात होता हो तो वह वाणी सत्य नहीं मानी जायेगी।

इस प्रकार सत्य न केवल हमारी वाणी तक ही सीमित है, अपितु यह तो हमारे सम्पूर्ण व्यवहार का नियामक है न केवल व्यक्तिगत स्तर पर ही अपितु सामाजिक स्तर पर भी सत्य समाज का नियंत्रक एवं संशोधक है।

(3) अस्तेय :- यमों में तृतीय स्थान अस्तेय का है। यह भी बहुत महत्त्वपूर्ण अंग है। व्यास जी शास्त्रीय आज्ञा के विरुद्ध दूसरों का धन लेने को स्तेय अर्थात् चोरी कहते हैं। इसलिए अन्यो के पदार्थों में स्पृहा = इच्छा न रखना है। अस्तेय एकान्त में साधना करने वाले योगी के लिए स्तेय या चोरी का अवकाश बहुत कम है, किन्तु सामाजिक जीवन में तो यह पदे-पदे लक्षित होता है। अपनी आय के अनुसार सरकार को निर्धारित टैक्स न देना भी चोरी है। 50 प्रतिशत से भी अधिक लोग ऐसा करते हैं। इसीलिए दो नम्बर के खाते भी रखते हैं। काला धन जमा रखते हैं जिस पर टैक्स देना तो दूर, उसका पता भी सरकार को नहीं होता। छोटे कर्मचारी से लेकर उच्च पदस्थ अधिकारी तक अनेक रूपों में झूठे बिल देकर सरकार से पैसा ऐंठते रहते हैं। इनमें यात्रा बिल, मेडिकल बिल तथा अन्य वस्तुओं के क्रय-विक्रय सम्बन्धी बिल सम्मिलित हैं। कई विभाग तो ऐसे भी हैं कि सरकार द्वारा विभाग को जनकार्यों के लिए आवंटित राशि ही हड़प करके झूठे बिल से उस धन का क्रय दिखला देते हैं। वेतन के अनुसार अपने कार्य को पूर्णतः न करना भी चोरी ही है। यह सब राष्ट्रीय व सामाजिक चोरी हम सबके जीवन में व्याप्त है। ऐसा राष्ट्रीय स्तर पर हो रहा है तभी तो स्व. राजीव गांधी जी ने कहा था कि जनता को सरकार द्वारा आवंटित धन का 20 प्रतिशत ही मुश्किल से मिलता है। 80 प्रतिशत तो बीच में ही खाय़ा जाता है। यह एक ईमानदार प्रधानमंत्री की स्वीकारोक्ति थी।

देश में दिन-प्रतिदिन होने वाले बड़े-बड़े घोटाले इसी स्तेयवृत्ति का ही परिणाम है। विडम्बना तो यह है कि आज व्यक्ति ऐसे कार्यों में न शर्म महसूस करता है न ही दण्ड का भय, क्योंकि पता है कि येन-केन प्रकारेण सभी तो इसमें लिप्त है। देश का कल्याण तभी हो सकता है जबकि वह अस्तेय वृत्ति को धारण करे।

(4) ब्रह्मचर्य :- यमों में चतुर्थ अंग ब्रह्मचर्य है। यह भी सम्पूर्ण समाज का ही नियामक है न केवल योगाभ्यासी व्यक्ति का ही ब्रह्मचर्य की शिक्षा के अभाव में ही अपहरण तथा बलात्कार आदि की घटनाएँ घटती हैं। इनमें हत्या तक भी कर दी जाती है। यदि राष्ट्रवासी ब्रह्मचर्य का पालन करने लगे तो ये समस्याएँ अपने आप ही समाप्त हो जायेंगी। अथर्ववेद में इसीलिए कहा गया है कि राजा ब्रह्मचर्य के द्वारा ही राष्ट्र की रक्षा करता है। समाज में ही नहीं, अपितु आज तो शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राओं में भी ब्रह्मचर्य का अभाव है जबकि वेद कहता है - "आचार्यो ब्रह्मचर्येण ब्रह्मचारिण मिच्छते"। आज जनसंख्या वृद्धि चिन्ता का विषय होता जा रहा है। अनेक अप्राकृतिक साधन इसे नियंत्रण करने के लिए अपनाये जा रहे हैं। सरकार इन पर पर्याप्त धन खर्च कर रही है किन्तु सफलता तो मिल नहीं रही है, इसके स्थान पर भोग विलास की प्रवृत्ति को अवश्य ही बढ़ावा मिल रहा है। जनता में ब्रह्मचर्य का प्रचार करके जहाँ एक ओर इस समस्या पर काबू पाया जा सकता है वहीं दूसरी ओर अनाचार दुराचार और सामाजिक अपराधों को भी दूर किया जा सकता है। यहाँ यह बात भी ध्यान रख लेनी चाहिए कि वाचस्पति मिश्र केवल जननेन्द्रिय के संयम को ब्रह्मचर्य नहीं मान रहे अपितु उनके अनुसार यह अन्य सभी इन्द्रियों के संयम के उपलक्षणार्थ हैं।

(5) अपरिग्रह :- नियमों में पंचम अंग अपरिग्रह है। व्यास जी के अनुसार विषयों में अर्जन, रक्षण, क्षय, संग तथा हिंसा आदि दोष लगे रहते हैं। इन दोषों को देखते हुए विषयों का ग्रहण न करना ही अपरिग्रह कहलाता है। सांसारिक व्यक्ति विषयों तथा उनके साधनभूत पदार्थों को ही सुखकर मानते हुए इनके ग्रहण में तत्पर रहते हैं। इसी के परिणामस्वरूप ही वे विविध क्लेशों में ग्रस्त रहते हैं। विषयों का अर्जन वस्तुतः कठिन कार्य है। अर्जित की रक्षा तो उससे भी कठिन है। इसी को योग तथा क्षेम नाम से ही कहा गया है। विषयों के अर्जन में हिंसा भी होती ही है चाहे वह वाचिक, मानसिक या शारीरिक किसी भी प्रकार की हो। यह भी दोष ही है। इतना होने पर भी विषय सदा के लिए स्थाई नहीं होते, अपितु वे नश्वर हैं। यही क्षय दोष है। योगी व्यक्ति तो इन दोषों के कारण विषयों को स्वीकार नहीं करता है। सांसारिक कार्य इनके बिना नहीं हो सकते। अतः सांसारिक व्यक्ति सर्वांश में तो इनका त्याग नहीं कर सकता, हाँ इतना अवश्य ही किया जा सकता है कि संसार में रहते हुए तथा सांसारिक कार्य करते हुए भी विषयों का सेवन कम से कम करें तथा अनासक्त भाव से करें। ऐसा करने से जीवन सुखी रहेगा। जीवन को सुखमय बनाने के लिए ही तो विषयों के अर्जन रक्षण आदि किए जाते हैं। यदि इनके प्रति दोष दृष्टि हो तो व्यक्ति अनासक्त भाव से इनका सेवन करेगा। परिणामस्वरूप ऐसा व्यक्ति स्वयं शान्त रहेगा तथा अन्यो को भी शान्ति प्रदान करेगा।

क्योंकि इसकी दृष्टि योगयुक्त हो गई है। इस प्रकार योग यम नामक यह प्रथम अंग वैयक्तिक एवं सामाजिक जीवन का संशोधक एवं नियामक है। यही अवस्था नियमों की भी है। नियमों में सर्वप्रथम अंग शौच है।

(1) शौच :- व्यास जी शौच के दो भेद करते हैं :- (क) बाह्य, (ख) आभ्यन्तर। जल-सिद्धि आदि से स्वच्छता तथा भक्षणीय पवित्र पदार्थों का आहार बाह्य शौच है। चित्त के मलों को दूर करके उसे स्वच्छ करना आभ्यन्तर शौच है। मद्यमांसादि अपवित्र पदार्थों के सेवन से चित्तवृत्तियाँ कलुषित होती हैं। इनमें मांस भक्षण का सम्बन्ध जीवों की हत्या से है। बिना जीव हत्या मांस नहीं मिलता यह क्रूर कर्म है। इस सृष्टि में मानव की भांति ही पशु-पक्षियों को भी जीने का अधिकार है। मांसभक्षी उनके इस अधिकार को तो छीन ही लेते हैं, बदले में अपने आप भी नाना शारीरिक एवं मानसिक दोषों से ग्रस्त होते हैं। योग की दृष्टि से प्राणिमात्र के प्रति दयादृष्टि है। वेद भी ऐसा ही कहता है - मित्रस्य चक्षुषाऽहं सर्वाणि भूतानि समीक्षे। यही दृष्टि उपयुक्त है। शौच का दूसरा अर्थ चित्त के मलों का क्षालन है। हमारे मन में नाना दुर्विचार, दुर्वासनाएँ, दुर्भावनाएँ, राग-द्वेष आदि भरे पड़े हैं। इनसे प्रेरित होकर ही व्यक्ति नाना प्रकार के दुष्कर्म करता है, जिनका दण्ड उसे व्यक्तिगत रूप में तथा पूरे समाज को भी भोगना पड़ता है। आज सर्वत्र यही अवस्था है। चित्त के दूषित होने से आज पूरा समाज ही दूषित हो रहा है। प्रतिदिन होने वाले अपहरण, डाके, लूट-पाट, दुराचार, बड़े-बड़े आर्थिक घोटाले, हत्याएँ आदि इसीलिए हो रहे हैं कि हमारे चित्त विकार ग्रस्त हैं। इन सबसे मुक्ति पाने का एक मात्र उपाय योग ही है। योग के शौच नामक अंग द्वारा यही कार्य किया जाता है।

(2) सन्तोष :- नियमों का दूसरा अंग संतोष है। संतोष का अर्थ है कि आवश्यकता से अधिक साधनों को एकत्रित न किया जाए। आज राष्ट्रवासियों ने संतोष को छोड़ दिया इसीलिए तो सभी लोग नाना भोग पदार्थों के संग्रह में यत्नशील रहते हैं। अपनी तृष्णावश या दूसरों के साथ स्पर्धा में हम ऐसे पदार्थों के संग्रह में यत्नशील रहते हैं जो हमारे लिए सर्वथा अनावश्यक होते हैं। कभी-कभी तो प्रदर्शन मात्र के लिए भी ऐसा किया जाता है। अनावश्यक भोग साधनों को एकत्रित करने के लिए धन चाहिए इसलिए व्यक्ति उल्टे सीधे तरीके से धनप्राप्ति का यत्न करता है। इसके लिए वह मिथ्या भी बोलता है चोरी भी करता है दूसरों को धोखा भी देता है। हत्या अपहरण करता है। खाद्य पदार्थों में मिलावट करता है और तो और ग्रीस तथा यूरिया जैसे विषैले पदार्थों से कृत्रिम दूध बनाकर तथा पशुओं की चर्बी से नकली देशी घी बनाकर जनता के धर्म तथा स्वास्थ्य दोनों को ही नष्ट करता है। यह सब हमारी अति संग्रहित का ही परिणाम है। यदि हम सन्तोषवृत्ति को अपना लें तो हमारे जीवन से बहुत सी बुराईयाँ दूर हो जायेंगी साथ ही हमें अपरिक्लपनीय सुख की प्राप्ति भी होगी जिसका उल्लेख महाभारत में इस प्रकार किया है :-

सन्तोषामृततृप्तानां यत्सुखं शान्तचेतसाम्।

कृतस्तद्धनलुब्धानामितश्चेतश्च धावताम्।।

(3) तप :- नियमों में तृतीय अंग तप है। व्यास जी द्वन्द्वों के सहन को तप कहते हैं। उन्होंने द्वन्द्वों की गणना भूख-प्यास, शीत-उष्णता, स्थान, आसन तथा मौन आदि के रूप में की है। ये केवल उपलक्षण मात्र हैं क्योंकि योगी को प्रायः इनका ही सामना करना पड़ता है। इनके अतिरिक्त लौकिक जीवन तो द्वन्द्वों से ही परिपूर्ण है। द्वन्द्व का अर्थ जोड़ा है। जीवन में हमें अनेक प्रकार के द्वन्द्व प्राप्त होते हैं। यथा सुख-दुःख, हानि-लाभ, मान-अपमान, जय-पराजय, हर्ष-शोक आदि। ये द्वन्द्व ही हमारे जीवन को नियमित तथा संचालित किए रहते हैं। इनको सहन करना ही तप है। प्रायः सभी व्यक्तियों को जीवन में ये द्वन्द्व प्राप्त होते हैं। धनी-निर्धन, विद्वान-मूर्ख, राजा-रंक आदि कोई भी इनकी पहुँच से बाहर नहीं है। अन्तर केवल इतना है कि जो व्यक्ति इन द्वन्द्वों को सहन कर लेता है वह अपनी जीवन यात्रा ठीक प्रकार चला लेता है, अन्यथा सहनशक्ति के अभाव में कितने ही लोग आत्महत्या या अन्यो की हत्या तक कर देते हैं। ऐसे कार्यों से बचने के लिए तप अर्थात् सहनशक्ति का होना अनिवार्य है तभी जीवन सुखी होगा।

(4) ईश्वर प्रणिधान :- ईश्वर प्रणिधान नियमों का अंतिम अंग है। व्यास जी परम गुरु परमात्मा में सभी कार्यों के समर्पण को ईश्वर प्रणिधान कहते हैं। यह भी बहुत महत्त्वपूर्ण तत्व है। जीवन में ईश्वर विश्वास होना ही चाहिए। इसे ही आस्तिकता कहते हैं। सच्चा आस्तिक कभी भी दुष्कर्म नहीं कर सकेगा क्योंकि उसे ईश्वरीय नियमों का भय है। अपने सभी कार्यों को परमेश्वर के ऊपर छोड़कर तो व्यक्ति का जीवन बिल्कुल ही शुद्ध पवित्र बन जायेगा।

इस प्रकार व्यक्तिगत तथा सामाजिक जीवन को शुद्ध पवित्र तथा नियन्त्रित करने में इन नियमों का भी महत्त्वपूर्ण स्थान है। आज तो न व्यक्ति शुद्ध है न समाज। इसीलिए राष्ट्र भी बुराइयों से आक्रान्त है। योग की दृष्टि व्यक्ति के साथ-साथ पूरे समाज को शुद्ध करने की है।

- पूर्व रीडर, रामजस कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

डॉलर फाउण्डेशन के अध्यक्ष एवं आर्य समाज के शीर्षस्थ नेता प्रसिद्ध दानवीर सेठ दीनदयाल गुप्त जी का आकस्मिक निधन सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने दी भावभीनी श्रद्धांजलि

डॉलर फाउण्डेशन के अध्यक्ष एवं आर्य समाज के शीर्षस्थ नेता प्रसिद्ध दानवीर आर्यश्रेष्ठी सेठ दीन दयाल गुप्त जी का दिनांक 2 मई 2026 को प्रातः 10.00 बजे कोलकाता में आकस्मिक निधन हो गया। उनके निधन से आर्य जगत ने एक कर्मठ, समर्पित एवं सेवाव्रती व्यक्तित्व को खो दिया है।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने बताया कि श्रद्धेय दीन दयाल गुप्त जी का सम्पूर्ण जीवन वैदिक धर्म, आर्य समाज के सिद्धांतों तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती के आदर्शों के प्रचार-प्रसार हेतु समर्पित रहा। आपने केवल आर्य समाज की गतिविधियों में ही नहीं, बल्कि विभिन्न गुरुकुलों, शैक्षिक संस्थाओं एवं वैदिक शिक्षण अभियानों में भी तन, मन एवं धन से महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान किया। वैदिक शिक्षा, राष्ट्रनिर्माण एवं समाज सेवा के क्षेत्र में आपका योगदान सदैव अविस्मरणीय एवं प्रेरणादायी रहेगा।

आप बंगाल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान तथा ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका अयोध्या धाम के संस्थापक न्यासी संयुक्त मंत्री के रूप में भी अत्यंत सक्रिय रहे। आपका जीवन सादगी, सेवा, त्याग एवं वैदिक निष्ठा का अनुपम उदाहरण था।

आप महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनन्य भक्त एवं आर्य समाज के सच्चे कर्मयोगी थे। आपने सदैव सत्य, वेद एवं समाज सुधार के पथ पर चलकर अनेक लोगों को प्रेरणा



प्रदान की। आपका यश, सेवा एवं वैदिक चिंतन सदैव समाज का मार्गदर्शन करता रहेगा। आपने अपने पैतृक गांव मान्हेरु जिला-भिवानी, हरियाणा में आर्य समाज का सुन्दर भवन बनाया तथा प्राथमिक विद्यालय बनाकर सरकार को दान कर दिया। आप पूरे गांव में पीने के पानी की सप्लाई अपनी ओर से करते थे। प्रतिवर्ष गांव में कुश्ती विशाल दंगल आयोजित

करके भाग लेने वाले पहलवानों को अपनी ओर से विशेष आर्थिक पारितोषिक देकर सम्मानित किया करते थे। उसी अवसर पर विशाल ऋषि लंगर (भण्डारा) भी होता था जिसमें हजारों लोग एकत्रित होते थे। इस अवसर पर विशेष यज्ञ एवं प्रचार का आयोजन भी होता था और आर्य समाज के भजनोपदेशक एवं विद्वान् आमंत्रित किये जाते थे। श्री दीनदयाल गुप्त ने मुझे कई बार इस बात के लिए प्रेरित किया कि शास्त्रार्थ महारथी एवं ऊँचे स्तर के विद्वान तैयार करने की योजना बनाओ इसके लिए स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम टिटौली में शास्त्रार्थ महारथी (उपदेशक) महाविद्यालय प्रारम्भ करो मैं उसमें पूरा सहयोग करूंगा। उनकी इच्छा थी कि आर्य समाज के भविष्य की सुरक्षा के लिए विद्वानों को तैयार करना अत्यन्त आवश्यक है। किन्तु विधि की विडम्बना कि वे अपनी इस इच्छा को मूर्तरूप होते नहीं देख पाये और महाप्रयाण कर गये। हमारा प्रयास रहेगा कि उनकी भावनाओं के अनुरूप विद्वान् तैयार करने की ठोस योजना तैयार करके उसे क्रियान्वित कर सकें। उनकी आत्मीयता सदैव स्मरण रहेगी।

परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत पुण्यात्मा को अपने शांति एवं सद्गति प्रदान करें तथा शोक संतप्त परिवार एवं समस्त आर्य समाज को यह वियोग सहन करने की शक्ति दें।

आर्य समाज सेक्टर-16, 17 व 18, फरीदाबाद के कर्णधार श्री मेघराज जी आर्य की स्मृति में दिनांक 25 मई को प्रेरणा सभा का हुआ आयोजन सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने दी भावभीनी श्रद्धांजलि



स्व० श्री मेघराज जी आर्य, आर्य समाज सेक्टर-16, 17 एवं 18 के वरिष्ठ सदस्य, संरक्षक एवं आर्य समाज के सशक्त स्तंभ थे। उनका दिनांक 16 मई 2026 को देहावसान हो गया। उनके निधन से आर्य समाज की अपूरणीय क्षति हुई है। उनका सम्पूर्ण जीवन वैदिक धर्म, समाज सेवा एवं आर्य समाज के सिद्धांतों के प्रचार-प्रसार के लिए समर्पित रहा।

उनकी पुण्य स्मृति में दिनांक 25 मई 2026 को किसान भवन में एक प्रेरणा सभा का आयोजन किया गया, जिसमें क्षेत्र के अनेक गणमान्य नागरिक, आर्य समाज के पदाधिकारी, समाजसेवी एवं सैकड़ों श्रद्धालु उपस्थित रहे। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने विशेष रूप से सम्मिलित होकर दिवंगत आत्मा को श्रद्धासुमन अर्पित किए।

स्वामी जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि श्रद्धेय श्री मेघराज जी का जीवन सादगी, सेवा, त्याग एवं वैदिक आदर्शों का अनुपम उदाहरण था। उन्होंने जीवनभर आर्य समाज की गतिविधियों में सक्रिय योगदान देते हुए समाज को जागरूक एवं संस्कारित बनाने का कार्य किया। स्व० श्री मेघराज जी स्वामी इन्द्रवेश जी, स्वामी अग्निवेश जी, स्वामी आदित्यवेश जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी व वर्तमान में मेरे साथ हर कार्य में विशेष सहयोगी रहे। 1987 में दिल्ली से देवराला तक सती विरोधी पद यात्रा, शराबबन्दी आन्दोलन के दौरान निकाली गई सभी जन-चेतना यात्राएं, टंकारा से अमृतसर तक जन-चेतना यात्रा एवं प्रतिवर्ष जिला फरीदाबाद में एक महीने तक निकाली जाने वाली वेद प्रचार यात्रा में वे आगे बढ़कर भाग लेते रहे। आर्य समाज के आन्दोलन, जन-चेतना यात्राएं, वेद प्रचार अभियान, युवा निर्माण शिविर या अन्य कोई भी गतिविधि स्वामी इन्द्रवेश जी और अग्निवेश जी के नेतृत्व में चली तो वे उसके महत्वपूर्ण सहभागी रहे। स्वामी श्रद्धानन्द जी (श्री शिवराम विद्यावाचस्पति) के साथ दिन-रात आर्य समाज के कार्यों में वे लगे रहते थे। उनके निधन से आर्य समाज ने एक समर्पित कार्यकर्ता



एवं आर्य नेता खो दिया है। उनका व्यक्तित्व सदैव समाज को प्रेरणा देता रहेगा। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान प्रदान करें तथा शोकाकुल परिवार को इस असहनीय दुःख को सहन करने की शक्ति एवं धैर्य प्रदान करें। स्वामी जी ने उनके परिवारजनों द्वारा स्व० श्री मेघराज आर्य की, की गई सेवा की मुक्त कंठ से प्रशंसा की।

केन्द्रीय मंत्री श्री कृष्णपाल सिंह गुजर ने भी प्रेरणा सभा में पधारकर स्व० श्री मेघराज आर्य को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

सभा में उपस्थित अनेक वक्ताओं एवं महानुभावों ने श्री मेघराज जी के जीवन से जुड़े प्रेरणादायी प्रसंगों को साझा करते हुए उन्हें अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि अपनी सांसारिक यात्रा पूर्ण होने के उपरांत उनके परिवारजनों ने मानव सेवा एवं समाजहित की महान भावना से प्रेरित होकर उनका पार्थिव शरीर मेडिकल कॉलेज को दान कर दिया। यह निर्णय उनके सेवा

एवं परोपकारमय जीवन का सर्वोच्च उदाहरण बन गया। श्री मेघराज जी ने स्वयं अपना देहदान पूर्व में ही कर दिया था जिसे परिवारजनों ने उनकी भावना के अनुरूप पूरा किया। प्रेरणासभा में सर्वश्री प्रेम कुमार मित्तल एडवोकेट, श्री बिरजानन्द, श्री रामनिवास, श्री मकेंद्र आर्य, श्री नरेश अग्रवाल, डॉ. गजराज सिंह आर्य, श्री रघुवीर शास्त्री, श्री महेशचन्द्र आर्य, आचार्य हरिओम, आचार्य मनुदेव शास्त्री, श्री राजेश शास्त्री, श्री जितेंद्र आर्य, श्री आर.डी. यादव, श्री यादराम आर्य, श्री धर्मेन्द्र मलिक, श्रीमती विमला ग्रोवर, श्री नन्दलाल कालड़ा, श्री दयानन्द सेठी, श्री अशोक शास्त्री, श्री सतीश सत्यम आदि महानुभाव भी उपस्थित रहे। प्रेरणा सभा के प्रारम्भ में श्री सतीश सत्यम युवा भजनोपदेशक के मधुर भजनों का कार्यक्रम रहा। अन्त में परिवार की ओर से स्व. श्री मेघराज आर्य के भतीजे श्री जनकराज ने सभी आगन्तुक महानुभावों का धन्यवाद ज्ञापित किया।



आर्य समाज रठौड़ा के स्वर्ण जयन्ती समारोह के अवसर पर होशियारी देवी गर्ल्स इण्टर कॉलेज, रठौड़ा में आयोजित कन्या चरित्र निर्माण एवं योग शिविर का समापन भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी की रही गरिमामयी उपस्थिति

स्वामी यतीश्वरानन्द जी पूर्व मंत्री उत्तराखण्ड मुख्य अतिथि एवं स्वामी आदित्यवेश जी रहे विशिष्ट अतिथि

बहन पूनम आर्या व बहन प्रवेश आर्या के नेतृत्व में बेटियों को किया गया प्रशिक्षित

कॉलेज के अध्यक्ष श्री रामपाल शास्त्री जी ने किया मंच संचालन एवं श्री राजेन्द्र आर्य ने व्यवस्था का दायित्व संभाला



कल्याणी आर्या जी एवं प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशक श्री वेदपाल आर्य ने उपस्थित जनसमूह को सम्बोधित किया तथा आर्य समाज रठौड़ा के इतिहास पर प्रकाश डाला। समापन समारोह के मंच का कुशल संचालन कॉलेज के अध्यक्ष श्री रामपाल शास्त्री जी ने किया उनके अतिरिक्त श्री राजेन्द्र आर्य, श्री अरुण आर्य, श्री धर्मेन्द्र पहलवान, आचार्य चन्द्रदेव शास्त्री, आचार्य सोमदेव शास्त्री जी, श्री अमित आर्य आदि ने कार्यक्रम में व्यवस्था का दायित्व संभाला।

गर्ल्स कॉलेज की प्रधानाचार्या श्रीमती मुनेश चौधरी के मार्गदर्शन में कॉलेज की सभी प्राध्यापिकाओं एवं कार्यकर्ताओं ने भोजन, जलपान एवं अन्य व्यवस्थाओं में अपना पूरा योगदान दिया। कार्यक्रम के प्रारम्भ में श्री वेदपाल आर्य के भजनों का श्रोताओं ने आनन्द लिया। उसके पश्चात् शिविरार्थी कन्याओं द्वारा विविध व्यायामों का प्रदर्शन किया गया जिसमें जूडो, कराटे, स्तूप, लाठी चलाना, योगासन, पी.टी. एवं कर्मांडो प्रशिक्षण का विशेष प्रदर्शन किया गया। यह व्यायाम प्रदर्शन कुमारी एकता आर्या के निर्देशन में किया गया।

व्यायाम प्रदर्शन के उपरान्त स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी ने अपना उपदेश देते हुए कहा कि हमारी बहनों को संस्कार एवं शारीरिक क्रियाओं का प्रशिक्षण अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि



जिस देश की नारी शक्ति संस्कारित एवं शिक्षित होती है वही देश उन्नति करता है। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने नारी जाति के उत्थान के लिए महान् कार्य किया था। स्वामी जी ने आर्य समाज रठौड़ा एवं होशियारी देवी गर्ल्स कॉलेज के पदाधिकारियों को भी शुभकामना दी और श्री रामपाल शास्त्री एवं उनके साथियों के पुरुषार्थ की मुक्त कंठ से प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि आर्य जगत में हमारी दो विदुषी बहनें कुमारी प्रवेश आर्या एवं कुमारी पूनम आर्या कन्याओं को संस्कारित करने के लिए अपना जीवन लगा रही हैं। उनका यह कार्य निःसंदेह अत्यन्त प्रशंसनीय है।

पूर्व मंत्री स्वामी यतीश्वरानन्द जी महाराज ने ऐसे शिविरों के महत्त्व पर विशेष प्रकाश डाला और कहा कि पूरे देश के विद्यालयों में लड़के और लड़कियों के ऐसे शिविर अनिवार्य रूप से लगने चाहिए। सरकारों की ओर से ऐसी व्यवस्था की जाये कि प्रत्येक विद्यालय में बच्चों को अच्छे संस्कार एवं आत्मरक्षा आदि से सम्बन्धित विशेष प्रशिक्षण दिये जायें।

स्वामी आदित्यवेश जी ने अपने ओजस्वी व्याख्यान में कन्या चरित्र निर्माण एवं योग शिविर की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आज हमें ऐसी विदुषी चरित्रवान एवं धार्मिकी नारी शक्ति की

शेष पृष्ठ 7 पर



आर्य समाज का मौलिक आधार

- स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती

सर्वश्रेष्ठ अध्येताओं के अनुसार हिमालय के आस-पास ही मनुष्य का अवतरण हुआ है। वहीं से उसकी संस्कृति का और मानवजाति की यात्रा का प्रारंभ होता है। वेद के दिव्य वाक्य मानवजाति के जीवन के आधार बने। कुछ काल प्रेम और आनन्द से रहने के बाद यहीं से मनुष्य समस्त संसार में बिखर गये। नयी परिस्थितियों ने मनुष्य जाति को नयी भाषा, नये रीतिरिवाज और नये मानदण्डों से सम्पन्न कर दिया। इसीलिए आज हम विविधता के संसार में निवास कर रहे हैं।

वेद समस्त मानवजाति की अटूट और अमूल्य निधि है। वैदिक ज्ञान के आलोक से समस्त संसार आलोकित हो उठा। कालोपरान्त ज्ञान के इस अप्रतिहत प्रवाह में अनेक विषाक्त धाराओं का सम्मिश्रण हो गया और ज्ञान विज्ञान की पावन वैदिक धारा ऐसी बदली कि उसको पहचानना भी कठिन हो गया। वैदिक ज्ञान के पुनरुद्धार की आवश्यकता का अनुभव होने लगा। ऐसे संकटमय युग में स्वामी दयानन्द सरस्वती का प्रादुर्भाव हुआ जिन्होंने वैदिक ज्ञान की ज्योतिर्मय परम्परा को पुनर्जीवित किया।

१८७५ में स्वामी दयानन्द सरस्वती ने बम्बई में आर्य समाज की स्थापना कर धार्मिक और सामाजिक क्रान्ति का शंख फूंक कर नवयुग का सूत्रपात किया। स्वामी दयानन्द ने वेद पठन पाठन का अधिकार सबको प्रदान किया। वेद की शिक्षाओं को समान रूप से सबके लिए उपादेय बताया। सन्निहित स्वार्थों के कारण भारत ही नहीं अनेक देशों में नए धार्मिक सम्प्रदाय बन गए। अनेकानेक मतमतान्तरों ने जन्म लिया। उनके अन्धविश्वासों पर स्वामी दयानन्द ने निर्ममतापूर्वक प्रहार किया। स्वामी जी ने धर्म के स्वाभाविक, सहज, सार्वभौम स्वरूप का परिचय कराया। मानव जाति की एकता एवं अखण्डता पर बल देते हुए उन्होंने मानवता के मंगलमय मार्ग को प्रशस्त कर दिया।

परमात्मा

वेद का धर्म एकेश्वरवादी है। वेदानुसार परमेश्वर एक है अनेक नहीं। वह सनातन है और ज्ञान का शाश्वत् स्रोत है। वही परमेश्वर हमारा आश्रय है और सृष्टि का कर्त्ता है। वह दयालु तथा न्यायकारी है। परमेश्वर सर्वज्ञ, सर्वव्यापक तथा सर्वशक्तिमान् है। वह निराकार तथा अजन्मा है। वह सत्, चित् एवं आनन्द है। ऐसा ही परमेश्वर मानने और पूजने योग्य है। परमेश्वर सम्बन्धी नाना अनर्गल धारणाओं से स्वामी दयानन्द ने हमें मुक्त किया। सत्यज्ञान से, सत्यनिष्ठ कार्य से, सेवाभाव से और योगाभ्यास से ही परमेश्वर की प्राप्ति सम्भव है, ऐसी उन्होंने उद्घोषणा की।

जीवात्मा

वैदिक धर्मानुसार जीवात्मा असंख्य हैं। प्रत्येक जीवात्मा अपने कर्मों के लिए उत्तरदायी है। पशु-पक्षी भोग-योनियां हैं। मनुष्य ही एक-मात्र उभययोनि है। पशु-पक्षी सहजवृत्ति से अपना-जीवन यापन करते हैं। मनुष्य बुद्धि और विवेक से काम लेता है। जन्म-मरण का चक्र वृतिवत्-काल से चला रहा है। धूप-छांह की तरह सुख-दुख जीवन के साथ है, किन्तु मनुष्य परमेश्वर की शक्ति, परोपकार, सदाचार आदि के द्वारा मुक्ति की अवस्था को प्राप्त कर सकता है। मुक्तावस्था शाश्वत् नहीं है क्योंकि सान्त कर्मों का अनन्त फल कदापि नहीं हो सकता।

परमात्मा और जीवात्माएं पृथक् सत्ताएं हैं। परमात्मा एक है और जीवात्माएं अनेक हैं। परमात्मा ज्ञान और आनन्द का स्रोत है परन्तु जीवात्माएं ज्ञान और आनन्द के लिए परमात्मा पर निर्भर हैं।

परमात्मा सृष्टि का कर्त्ता और जीवात्मा भोक्ता है। परमात्मा अशरीरी और जीवात्मा 'शरीरी' है। परमात्मा अजन्मा और जीवात्मा 'शरीर के माध्यम से जन्म-मरण के चक्र में आता जाता है। परमात्मा कर्माध्यक्ष है और जीवात्मा शुभाशुभ कर्मों का कर्त्ता और उनके फलों का भोक्ता है। परमात्मा सर्वदा-मुक्त है किन्तु जीवात्मा मुक्ति और बन्धन को प्राप्त होता रहता है।

प्रकृति

वैदिक सिद्धान्तानुसार परमात्मा तथा जीवात्मा के सदृश प्रकृति भी अनादि है। ये तीनों तत्व सदा से हैं और सदा रहेंगे। आद्य प्रकृति का कोई रूप रंग नहीं। आद्य प्रकृति के सम्बन्ध में कुछ भी कहना अत्यन्त कठिन है। परमात्मा की शक्ति प्रकृति को नाना रूपों और नाना रंगों में परिवर्तित कर सकती है। परमात्मा के तपस् से प्रकृति सृष्टि की संरचना करती है। अभाव से भाव की उत्पत्ति सम्भव नहीं है। बिना प्रकृति के सृष्टि बन ही नहीं सकती।

परमात्मा सृजन द्वारा ही आपने आप को अभिव्यक्त करता है। सृष्टि अटल विशवत् नियमों पर आश्रित है। वैदिक सिद्धान्तानुसार प्रकृति सत् एवं उद्देश्य पूर्व है। सृष्टि में नियम, व्यवस्था तथा उद्देश्य से परमात्मा की महिमा का दर्शन होता है। सृष्टि का सृजन, संहार निरन्तर चलता रहता है। इस सृष्टि से परमात्मा अहर्निश कर्म में लगा रहता है।

जीवन

परमात्मा सर्वोच्च नैतिक आदर्शों एवं मूल्यों का साकार रूप है। वैदिक परमात्मा एक अर्थ में नैतिक परमात्मा है। सत्य और दया का मूर्तिमान् रूप है। नैतिक-आदर्श नाना रूपों में अभिव्यक्त होते हैं। "परमात्मा की रची सृष्टि का ज्ञान प्राप्त करो, उस ज्ञान से मानव-जाति को सम्पन्न करो" यह हमारे जीवन का उद्देश्य है। सत्य, अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह आदि नैतिक मूल्यों के अभाव में जीवन का वैभव निस्तेज और निष्प्राण हो जाता है। साधना, स्वाध्याय और सत्पुरुषों का संग, उपासना आदि द्वारा नैतिक आदर्श को जीवन में उतारना सम्भव है, अन्यथा नहीं।

वेदानुसार सर्वोच्च नैतिक सत्ता है-परमात्मा। एतदर्थ परमात्मा की प्रार्थना-वैदिक उपासना पद्धति का अविभाज्य अंग है। परमात्मा को स्तुति-प्रार्थना उपासना की किञ्चित भी आवश्यकता नहीं है। स्तुति-प्रार्थना-उपासना से जीवात्मा परमशुद्धता को प्राप्त होकर सत्कर्मों को करने की सामर्थ्य से सम्पन्न हो जाता है। स्तुति में हम परमात्मा के गुणों की परिगणना करते हैं, जैसे-दयालुता, न्यायकारिता आदि। प्रार्थना में हम परमात्मा से विनम्र मांग करते हैं कि ये समस्त गुण हमारे जीवन में आ जावें। उपासना के द्वारा परमात्मा की समीपता से नया तेज, नया ओज, नया जीवन उपलब्ध होता है। जीवात्मा स्वपुरुषार्थ से ही परमात्मा की ओर अग्रसर हो सकता है। जीवात्मा और परमात्मा के बीच किसी मध्यस्थ की आवश्यकता नहीं।

समाज

मनुष्य समाज में रहता है। समाज में ही जन्मता और बढ़ता है। समाज से ही वह भाषा और संस्कृति भी पाता है। इस नाते समाज के प्रति इसका जो दायित्व है उससे वह मुँह नहीं मोड़ सकता। ईश्वरीय प्रेम का एक अर्थ समाज की निष्काम सेवा करना भी है। वर्णाश्रम व्यवस्था भी मनुष्य को अधिकारों के स्थान पर कर्तव्यों पर अधिक बल देती है। जब समाज कर्तव्यों की उपेक्षा कर अधिकारासक्त होता है, तब अव्यवस्था का साम्राज्य

स्थापित हो जाता है। किसी भी समाजोपयोगी कार्य को हीन या अधम नहीं मानना चाहिए। कार्यों की गुरुता तथा प्रकृति भिन्न होते हुए भी उसका आध्यात्मिक मूल्य एक-समान है। निष्ठा एवं सत्यता-सम्पन्न प्रत्येक कर्म मनुष्य को मुक्ति की ओर ले जाता है। कमजोर वर्ग की सहायता करना और उनकी उन्नति के लिए अवसर प्रदान करना, समाज में शान्ति एवं व्यवस्था के लिए अत्यन्त आवश्यक है, 'केवल शक्तिशाली को ही जीने का अधिकार है' -ऐसा मानना सामाजिक सामञ्जस्य के सिद्धान्त पर निर्मम प्रहार है। स्वामी दयानन्द स्वतन्त्रता के साथ-साथ "सर्व-हितकारी" शब्द का पुनः-पुनः प्रयोग करते हैं, क्योंकि स्वच्छन्दता सर्वनाश की जननी है।

सभी समाजों में कर्मकाण्ड का प्रचलन होना आवश्यक है। वैदिक धर्म में जीवन-निर्माणकारी सोलह संस्कारों का अनुपालन जीवन की सत्ता एवं महत्ता के वैदिक आदर्श के अनुसार जीवन का अन्तिम उद्देश्य पाने में परम सहायक है।

आर्यसमाज की मान्यताओं और आस्थाओं के बारे में सार रूप में यह कह दिया गया है कि जीवन के ये आधारभूत सिद्धान्त अखिल मानव-जाति के लिए समान रूप से उपयोगी हैं। हम सभी "अमृत-पुत्र", "पृथिवी-पुत्र" हैं। मानव जाति का मंगल करने वाले सभी विचारक, आचार्य, चिन्तक समान रूप से हमारे लिए आराध्य हैं।

महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज की स्थापना द्वारा मानव महिमा का महादान कर मानव को दिव्य गरिमायुक्त करने का महत् प्रयत्न किया। पीड़ित प्रताड़ित मानवता का आह्वान किया और अपने प्रबल उद्बोधन से मानवता को प्रगति पथ पर अग्रसर किया।

विज्ञान

मैं आजीवन एक ही सूत्र का प्रचार करता चला आ रहा हूँ वह सार सूत्र है- 'Rationalize your religion Spiritualize your science',- धर्म को बौद्धिकता और विज्ञान को आध्यात्मिकता का आधार दो। आर्य समाज का यही मौलिक आधार है। इसी में मनुष्य जाति का मंगल है। विज्ञान ने हमें दैत्याकार शक्तियों का स्वामी बना दिया है। यदि हमने भीतरी आत्मिक शक्ति का विकास नहीं किया तो विज्ञान हमें महाविनाश की ओर ले जाएगा। इसमें सन्देह नहीं कि विज्ञान ने अनेक तथ्यों को समझने में हमारी सहायता की है और अन्धविश्वासों से छुड़ाया है। नयी सम्पन्नताएं भी दीं। विज्ञान नये सृजन का नाम भी हो सकता है और संहार का भी। विज्ञान संसार को स्वर्ग भी बना सकता है और नरक भी। धर्माधारित विज्ञान से ही मनुष्य का कल्याण अवश्य सिद्ध होगा।

अज्ञान और अन्धविश्वास पूरित धर्म अधर्म ही है। ऐसा धर्म जीवन को दुःख प्रदान करता है। हमें आज के बुद्धिवादी युग में धर्म को तर्क संगत आधार देने होंगे। बुद्धि का दीपक लेकर हमें धर्म-क्षेत्र में भी उतरना होगा। यदि मनुष्य को जीवित रहना है तो विज्ञान को अध्यात्म पर अधिष्ठित करना होगा और धर्म को तर्क संगत आधार देना होगा।

परम मंगलमय शक्ति के सम्मुख विनम्रता का भाव अपना कर निरन्तर सत्यान्वेषण में लगे रहकर मनुष्य जाति के कल्याण के लिए निष्काम भाव से कार्यरत रहें- यही वैदिक धर्म का आदर्श और उद्देश्य है और इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना की थी।

मलेरिया ज्वर से कैसे बचें

- डॉ. अंजू चक्रवर्ती

परिचय : खून में उत्पन्न हुए विष को बुखार रूपी आग द्वारा सफलता से जलाना प्रकृति का एक सुलभ प्रयास है। दूसरे शब्दों में जो यह मान्यता है कि कीटाणुओं से ही विभिन्न रोग पैदा होते हैं तो बुखार रूपी अग्नि उनको भी जलाने वाली है। बुखार के समय प्रकृति शरीर को साफ करने के लिए किस तरह तेजी से झाड़ू साफ करना चाहती है, ठीक उसी समय जी मिचलाता है मानो वमन होना चाहती है, सांस में भी बदबू आने लगती है उधर नाक से जो सांस रोगी छोड़ता है उससे भी बदबू आ रही है। उस समय हृदय शरीर के भीतर जमे हुए विष को खून के माध्यम से शुद्ध करने के लिए फेफड़ों को दे रहा है। फेफड़ों में बड़ी तेजी से रक्त शोधन की प्रक्रिया चल रही होती हैं श्वास की गंदगी उसे प्रकट कर रही होती है कि फेफड़ों में किस प्रकार तेजी से सफाई का काम हो रहा है। परिणामस्वरूप दिल की धड़कन बढ़ जाती है हृदय की इस परेशानी को हाथ की नाड़ी अपनी तेज चाल से प्रकट कर रही होती है। दूसरी ओर पेशाब गंदला और बदबूदार होता है वह भी यही सिद्ध करता है कि प्रकृति शरीर रूपी घर को साफ कर रही है। अन्त में बुखार की गर्मी बढ़ जाने पर परिणामस्वरूप जब पसीना आने लगता है तब समझें कि प्रकृति को अपने काम में पूरी सफलता मिली है और पसीने में उसी प्रकार की बदबू पाई जाती है दुश्मन के वेश में आया हुआ बुखार क्षतिकारक नहीं मानते अपितु प्राकृतिक चिकित्सा में केवल बुखार को ही नहीं अन्य अनेक रोगों को मित्र मानकर चलते हैं। अतः बुखार के सम्बन्ध में भी हमारी मान्यता है कि बुखार उतारने का प्रयास करना ही मूर्खता है किसी भी प्रयास से बुखार को उतार देने से बुखार का कारण नष्ट नहीं होगा अपितु दवाओं से दबाये जाने पर बुखार पुनः लौट आता है।

2. अजीर्ण हो जाता है।

3. चर्म रोग, हृदय की दुर्बलता तथा मस्तिष्क के रोग के रूप परिवर्तित हो जाता है। अमुक प्रकार के जीवाणु ही विशेष प्रकार के बुखार के कारण होते हैं, उन जीवाणुओं को मार देने से बुखार चला जाता है इस सिद्धान्त में यह तो मानना ही होगा कि जीवाणु भी शरीर की किसी दोषपूर्ण दशा में ही पनपते है इस सिद्धान्त में यह तो मानना ही होगा कि जीवाणु भी शरीर की किसी दोषपूर्ण दशा में ही पनपते हैं। सर्वथा शुद्ध शरीर में बाहर से आये हुए जीवाणु भी जीवित नहीं रह सकते और नहीं पनप सकते हैं। दोषमय दशा में पनपे हुए जीवाणुओं को विषाक्त दवाओं से मार देने पर भी अधिक लाभ नहीं होता। मारे गये जीवाणु भी पड़े हुए दोष की अधिकता के कारण ही बनेंगे।

वर्तमान समय में बुखार कोई रोग नहीं गिना जाता है। शरीर की विभिन्न रूग्ण अवस्थाओं का वह एक लक्षण है ऐसा लिया जाता हैं जिस कारण से बुखार पैदा होता है उसको रोग कहा जाता है। इसलिए वर्तमान समय में बुखार के बदले में उसके कारण के अनुसार ज्वर का विभिन्न नाम दिया जाता है।

साधारण बुखार, मलेरिया, टायफाइड, टायफस, इन्फ्लूएंजा, डेंगू, फाइलेरिया, गर्दन तोड़, काला ज्वर तथा प्लेग आदि नामों से जाना जाता है। जैसे मलेरिया इस कारण फैलता है कि उसके लक्षण और उपचार किस तरह से किया जा सकता है।

मलेरिया : मलेरिया एक इटालियन भाषा का शब्द है। इस भाषा में

पृष्ठ 5 का शेष

कन्या चरित्र निर्माण एवं योग शिविर का समापन भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न

आवश्यकता है जो भावी पीढ़ी को संस्कारित कर सकें तथा देश को उन्नति की ओर ले जा सकें। उन्होंने कहा कि होश्यारी देवी गर्ल्स इण्टर कॉलेज की छात्राएं सौभाग्यशाली हैं कि उन्हें इस शिविर में भाग लेने का अवसर मिला और आत्मरक्षा के गुर सीखे।

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि आर्य समाज रठौड़ा के स्वर्ण जयन्ती समारोह एवं होश्यारी देवी गर्ल्स इण्टर कॉलेज द्वारा आयोजित कन्या चरित्र निर्माण एवं योग शिविर केवल एक प्रशिक्षण शिविर नहीं, बल्कि वैदिक संस्कृति के पुनर्जागरण का पावन प्रयास है। वेदों में नारी को “गृह की ज्योति” एवं “समाज की आधारशिला” कहा गया है। जिस समाज की बेटियाँ संस्कारित, शिक्षित और आत्मविश्वासी होती हैं, वही समाज उन्नति के शिखर को प्राप्त करता है। इसलिए बालिकाओं का चरित्र निर्माण, आत्मरक्षा एवं आध्यात्मिक विकास समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है। ऋग्वेद में कहा गया है कि ज्ञान ही मनुष्य को अज्ञानता के अंधकार से निकालकर सत्य के प्रकाश की ओर ले जाता है। इसी उद्देश्य से इस शिविर में बालिकाओं को योग, आत्मरक्षा, अनुशासन, स्वाध्याय तथा वैदिक संस्कारों का प्रशिक्षण दिया गया। योग केवल शरीर को स्वस्थ रखने का साधन नहीं, बल्कि मन, बुद्धि और आत्मा को संतुलित करने की दिव्य प्रक्रिया है। नियमित योग एवं प्राणायाम से आत्मबल, संयम और सकारात्मक सोच विकसित होती है।

स्वामी जी ने कहा कि आज के समय में बालिकाओं को आत्मनिर्भर एवं निर्भीक बनाना अत्यंत आवश्यक है। जूड़ो–कराटे, लाठी एवं आत्मसुरक्षा का प्रशिक्षण उन्हें साहस और आत्मविश्वास प्रदान करते हैं। साथ ही वैदिक शिक्षा उन्हें मर्यादा, सेवा, सदाचार और राष्ट्रभक्ति का संदेश देती है। शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार प्राप्त करना नहीं, बल्कि श्रेष्ठ चरित्र का निर्माण करना है। आर्य समाज सदैव से नारी शिक्षा, समाज सुधार और वैदिक संस्कृति के प्रचार का अग्रदूत रहा है। यह शिविर उसी महान परंपरा का जीवंत उदाहरण है। हमें संकल्प लेना चाहिए कि अपनी बेटियों को आधुनिक शिक्षा के साथ–साथ वैदिक संस्कारों से भी जोड़ेंगे, ताकि वे राष्ट्र और समाज के उज्ज्वल भविष्य की निर्माता बन सकें।

‘मेला’ शब्द का अर्थ है खराब और एरिया’ शब्द का अर्थ है हवा अर्थात् खराब हवा के द्वारा जो बुखार उत्पन्न होता है उसी को मलेरिया कहा जाता है।

मलेरिया के सूक्ष्म जीवाणु एनोफिलिस जाति के मच्छरों द्वारा मनुष्य के एक शरीर से दूसरे शरीर में पहुँचाये जाते हैं। ये जीवाणु शरीर के खून के कणों पर आक्रमण करके उन्हें नष्ट करते हैं इसी से मलेरिया बुखार के रोगी के शरीर में इन रक्त कणों की कमी हो जाती है, परन्तु मलेरिया के कीड़ों के शरीर में घुसते ही आदमी बीमार पड़ जाये ऐसा नहीं होता है जिनका शरीर सबल और दोष रहित है मलेरिया के मच्छरों के काटने पर भी उन्हें कुछ नहीं होता। बहुत से लोग मलेरिया के इलाकों में रहते हैं पर उन्हें मलेरिया नहीं होता। मलेरिया का असली कारण इस शब्द के भीतर ही छुपा हुआ है। कुछ दिन तक बदबू और जहरीली हवा लगने के कारण जब खून कमजोर पड़ जाये और शरीर के भीतर विजातीय पदार्थ जमा हो जाते हैं तभी मलेरिया के कीड़े शरीर के ऊपर अपना असर बढ़ाने में कामयाब होते हैं।

मलेरिया के रोगी को हमेशा बुखार नहीं रहता परन्तु अत्याधिक इन्द्रिय सेवा, अधिक गर्म या ठण्डी हवा के झोंके लेना नुकसानदायक है। यह नहीं है कि केवल खराब गैस के कारण रक्त खराब हो जाता है। स्वास्थ्य के साथ बहुत अन्याय और अन्य प्रकार के अनियम करने से शरीर के भीतर बहुत अधिक परिमाण में दूषित पदार्थों का संग्रह होने से भी खून की कणिकाएँ अत्यन्त दुर्बल हो जाती है जिससे मलेरिया विषाणु उन पर आसानी से आक्रमण करते हैं।

कारण :- 1. पेट की खराबी और गन्दगी से होती है। अनियमित आहार–विहार से सम्भव होता है।

2. मच्छर का जहर केवल इस सर्चित गन्दगी में उभार पैदा करके मलेरिया ज्वर द्वारा हमें इस बात की सूचना देता है कि शरीर में काफी मल एकत्र हो गया है।

3. बरसात के बाद ऐसी हवा में श्वास लेते हैं जो पृथ्वी से निकली हुई गंदी गेसों से लदी होती है।

4. ऐसे तालाब, झील या बरसात से भरे गढ़दों के पानी मे न्हाना जिनका पानी पेड़ के पत्ते और कूड़ा आदि गिरते रहने से सड़ गया हो उसमें मलेरिया विष उत्पन्न हो गया और वह विष (एनोफिलिस) नामक मच्छरों के जरिये फैल रहा हो। अधिक दिन तक कूलर में पानी जमा होने पर भी होता है।

लक्षण :- मलेरिया के लक्षणों की निम्न तीन अवस्थाएँ हुआ करती है।

1 **शीत अवस्था** – उबकाइयाँ आती हैं, वमन होता है। देह में दर्द रहता है और प्यास लगती है। कभी–कभी रोगी ठण्ड से थर–थर कांपने लगता है, पित्त की वमन करता है और उसके हाथ पांव बर्फ से ठण्डे हो जाते हैं।

2. **उत्ताप अवस्था** – कुछ देर जाड़ा आने के बाद सारा शरीर गर्म होता है। उत्ताप 103–104 डिग्री तक बढ़ जाता है। रोगी बहुत छटपटाता है और ताप अवस्था बहुत देर तक बनी रहती है।

3. **पसीने की अवस्था :-** इस अवस्था के आने पर समझना

चाहिए कि अब बुखार उतरने वाला है। मलेरिया का बुखार पसीना देकर छूटता है और तब रोगी को आराम मालूम होता है, किन्तु फिर बुखार आता है। यह अवस्था ज्यादा दिन तक रहे तो रोगी की तिल्ली और जिगर बढ़ जाता है।

प्राकृतिक चिकित्सा :

1. यदि रोगी की स्थिति ठीक है अर्थात् बहुत तेज 104 डिग्री से ऊपर बुखार, नहीं है तो सर्वप्रथम रोगी को वमन और नेति करवा देना चाहिए। इससे सिर दर्द और शरीर का भारीपन ठीक हो जायेगा।

2. मौसम के अनुसार ठण्डे या गर्म पानी में रुचि के अनुसार नीबू मिलाकर पिला दें।

3. पेड़ू पर मिट्टी की पट्टी 20–30 मिनट रखें उसके बाद एनिमा करा दें।

4. एनिमा के बाद कुछ मिनट कटि स्नान या हिप बाथ दें। इससे बुखार की तेजी थम जाती है।

5. अगर कंपकपी या जाड़ा देकर आने वाला बुखार है तो प्रकृति की उस स्वाभाविक मांग का आदर करना होगा उसी समय गरम–गरम पानी में नींबू मिलाकर या सादा पानी पिलायें फिर पैरों को गर्म स्नान दें।

6. अगर बुखार कम नहीं होता है तो सिर पर ठण्डे पानी की जलधारा बहाई जा सकती है अथवा खूब ठण्डे पानी में भीगा तौलिया सिर माथे पर रखना चाहिए थोड़ी–थोड़ी देर में इसे भिगोते रहें। तेज बुखार का मस्तिष्क पर कुप्रभाव नहीं होगा। इससे सिर में खून का दबाव कम हो जायेगा। रोगी को सहजता से नींद आ जायेगी। ध्यान रहे बर्फ का सीधा प्रयोग माथे पर न करें।

(क) तौलिया भिगोकर शरीर को पोंछना।

(ख) सारे शरीर पर गीली चादर की लपेट का प्रयोग करना चाहिए।

घरेलू उपचार :-

1. नीबू रस पानी मिलाकर दूध को फाड़कर उसका पानी पिलाने से काफी आराम मिलता है।

2. नीम की पत्तियाँ, गिलोय, सौफ, अजवायन, सबको पीसकर या उबालकर इस पानी को थोड़े–थोड़े समय बाद पिलाना चाहिए।

3. मौसम की सब्जियों का सूप नीबू रस मिलाकर पिलाने से आराम मिलता है।

4. घी के साथ लहसुन या भुनी फिटकरी 2 रत्ती किसी चीज में मिलाकर खिला देने से ज्वर प्रायः नहीं आता।

5. तुलसी की 7 से 10 पत्तियाँ पानी में पीसकर और गरम करके प्रतिदिन दोनों समय पीने से मलेरिया ज्वर शीघ्र भागता है।

6. मौसमी फल का रस लाभदायक है।

यौगिक उपचार :

1. कपाल भाति व वमन क्रिया।

2. दीर्घ प्राणायाम।

3. अनुलोम–विलोम प्राणायाम।

– **ओ३म योग संस्थान (शाखा– गुड़गांव, हरियाणा)**

के महत्वपूर्ण गुर सिखाए तथा उन्हें अपने आत्म विश्वास को जागृत करने की प्रेरणा दी।

शिविर के बौद्धिक सत्र में प्रसिद्ध विदुषी पद्मश्री डॉ. सुकामा आचार्या जी शिविर में पधारीं और उन्होंने छात्रओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि बेटियाँ ही परिवार एवं समाज को संस्कारित बनाने की आधारशिला होती हैं। उन्होंने वेदों की महिमा का वर्णन करते हुए बालिकाओं से वैदिक आदर्शों को अपने जीवन में अपनाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि भारतीय संस्कृति एवं संस्कारों की जड़ें वेदों में निहित हैं और वेद मानव जीवन को सही दिशा प्रदान करते हैं।

विद्यालय की प्रधानाचार्या मुनेश चौधरी ने अपने प्रेरणादायी विचार व्यक्त करते हुए कहा कि इस प्रकार के शिविर छात्राओं के व्यक्तित्व विकास में अत्यंत सहायक सिद्ध होते हैं। शिक्षिका एकता एवं अंतिम आर्या ने भी शिविर की गतिविधियों की विस्तृत जानकारी दी। संपूर्ण आयोजन वैदिक संस्कृति, नारी सशक्तिकरण एवं चरित्र निर्माण का प्रेरणादायी उदाहरण बनकर क्षेत्र में विशेष चर्चा का विषय रहा।

कार्यक्रम के अन्त में क्षेत्र के प्रतिष्ठित आर्यजनों का स्मृति चिन्ह देकर स्वागत किया गया। इस अवसर पर सर्वश्री बिरजानन्द दैवकरणी गुरुकुल झज्जर, श्री बिरजानन्द प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, श्री रामनिवास आर्य–नारनौल, श्री राष्ट्रवर्द्धन वानप्रस्थी, श्री जयदेव आर्य–कंडेरा, चौधरी विक्रम सिंह ठेकेदार–कंडेरा, श्री ब्रह्मपाल सिंह आर्य पूर्व प्रधान जिला सभा बागपत, श्री राजेन्द्र सिंह आर्य प्रधान जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा बागपत, श्री हरपाल सिंह आर्य, श्री बृजपाल राणा–निरपुणा, श्री देवेन्द्रमुनि जी वानप्रस्थ–शामली, श्री ओमवीर सिंह इंस्पेक्टर दिल्ली पुलिस, श्री ओमपाल सिंह छपरौली, डॉ. ओमवीर सिंह बड़ौत, श्री ओमवीर सिंह–रंक्षान, श्री ओम प्रकाश सिंह–सिलाना, श्री अरुण कुमार रठौड़ा, श्री कंवर पाल सिंह, श्री अंकित वीर चेयरमैन मलकपुर गन्ना मील आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। कॉलेज के प्रबन्धक श्री धर्मवीर सिंह एवं श्रीमती मुनेश ने सभी का धन्यवाद व्यक्त किया। कार्यक्रम अत्यन्त प्रभावशाली एवं प्रेरणादायक रहा। कॉलेज की जिन छात्राओं ने परीक्षा में सर्वाधिक अंक प्राप्त किये उन्हें कॉलेज की ओर से धनराशि एवं स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया।

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें



आर्य समाज के त्यागी, तपस्वी एवं तेजस्वी संन्यासी, सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें :-
www.facebook.com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें तथा अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई-मेल : aryavesh@gmail.com

दूरभाष : 011-23274771, 42415359

प्रतिष्ठा में :-

अवितरण की दशा में लौटारें -
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-110002

आर्य समाज गंगाना, जिला-सोनीपत (हरियाणा) का 46वाँ वार्षिक समारोह भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी मुख्यअतिथि के रूप में हुए सम्मिलित



आर्य समाज गंगाना का 46वाँ वार्षिक समारोह दिनांक 25 मई 2026 को आर्य हाई स्कूल, जागसी रोड, गंगाना (सोनीपत) में अत्यंत भव्यता, वैदिक गरिमा एवं आध्यात्मिक उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ। समारोह में क्षेत्र के अनेक विद्वान, समाजसेवी, आर्यजन एवं श्रद्धालु बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। कार्यक्रम का वातावरण वैदिक मंत्रों, भजनों एवं आध्यात्मिक ऊर्जा से पूर्णतः ओतप्रोत रहा।

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी मुख्य अतिथि के रूप में विशेष रूप से उपस्थित हुए। उनके अतिरिक्त अनेक विद्वान एवं गणमान्य महानुभावों ने भी अपनी गरिमामयी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

समारोह का शुभारम्भ प्रातः 9 बजे वैदिक विधि

से यज्ञ के साथ हुआ। विद्वान आचार्यों द्वारा उच्चारित वैदिक मंत्रों एवं सामूहिक आहुतियों से सम्पूर्ण वातावरण भक्तिमय एवं पवित्र बन गया। यज्ञ के उपरान्त मंचीय कार्यक्रम का संचालन आरम्भ हुआ, जिसमें विभिन्न वक्ताओं ने वैदिक धर्म, शिक्षा, समाज सुधार एवं राष्ट्र निर्माण से जुड़े प्रेरणादायी विचार प्रस्तुत किए।

अपने प्रेरणादायी उद्बोधन में स्वामी आर्यवेश जी ने आर्य समाज गंगाना द्वारा विगत 46 वर्षों में किए गए धार्मिक, सामाजिक एवं शैक्षिक कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि आर्य समाज गंगाना ने निरंतर वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार, समाज सुधार, नारी शिक्षा, युवा जागरण एवं संस्कार निर्माण के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किए हैं। संस्था ने केवल धार्मिक चेतना ही नहीं, बल्कि

समाज में नैतिकता, शिक्षा एवं राष्ट्रभक्ति की भावना को भी सुदृढ़ करने का कार्य किया है। उन्होंने कहा कि आज के भौतिकवादी युग में आर्य समाज जैसी संस्थाएँ समाज को सही दिशा प्रदान कर रही हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रदत्त वैदिक सिद्धांत आज भी मानवता के लिए उतने ही प्रासंगिक हैं जितने पूर्व में थे। उन्होंने युवाओं से वैदिक संस्कृति, स्वाध्याय, सत्य, सेवा एवं राष्ट्रहित के मार्ग पर चलने का आह्वान किया। स्वामी जी ने आर्य समाज के प्रधान श्री बलराम आर्य, श्री ओम प्रकाश देशवाल जी, श्री कुलदीप सिंह की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए कहा कि मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप सभी आर्य समाज के कार्य को इसी प्रकार बढ़ाने में अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

कार्यक्रम में उपस्थित वक्ताओं ने भी आर्य समाज गंगाना की सेवा यात्रा को प्रेरणादायी बताते हुए संस्था के पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं को साधुवाद दिया। समारोह के दौरान भजन, वैदिक प्रवचन ने उपस्थित जनसमूह को मंत्रमुग्ध कर दिया।

सम्पूर्ण आयोजन वैदिक संस्कृति, सामाजिक समरसता एवं राष्ट्र निर्माण के संकल्प का जीवंत उदाहरण बनकर क्षेत्र में विशेष चर्चा का विषय रहा। कार्यक्रम के उपरान्त ऋषि लंगर की सुन्दर व्यवस्था की गई थी जिसमें हजारों लोगों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम में क्षेत्र के अनेक गांव से गणमान्य लोग पधारे हुए थे।

संस्कृता: स्त्री पराशक्ति:

"ओ ३म्"

संस्कारवान स्त्री परमशक्ति है।

कन्याओं एवं युवतियों के लिए स्वर्णिम अवसर

कन्या चरित्र निर्माण एवं योग शिविर

दिनांक: 6 जून, शनिवार, 2026 से 12 जून शुक्रवार 2026 तक

स्थान: स्वामी इंद्रवेश विद्यापीठ, गाँव टिटौली, जिला रोहतक (हरियाणा)

पाँच सौ कन्याएँ एवं युवतियाँ भाग लेंगी

शिविर के मुख्य आकर्षण

- राष्ट्रीय भावना, अनुशासन, नैतिक शिक्षा तथा परोपकार की शिक्षा दी जाएगी।
- योगासन, प्राणायाम, जूडो कराटे आदि शारीरिक एवं आत्मरक्षा सम्बन्धी प्रशिक्षण दिया जाएगा।
- वैदिक विद्वानों द्वारा संध्या, यज्ञ, आर्य संस्कृति व वैदिक सिद्धान्तों पर व्याख्यान तथा शंका समाधान किया जाएगा।
- चर्चित महिलाओं द्वारा जीवन में सफलता के गुर सिखाए जाएंगे।
- व्यक्तित्व विकास, वक्तुत्व कला एवं आत्म विश्वास के विकास का प्रशिक्षण दिया जाएगा।
- भोजन की व्यवस्था पूर्णतः नि:शुल्क रहेगी।

आवश्यक नियम व निर्देश

- अनुशासन का पालन आवश्यक होगा।
- कोई भी कीमती सामान अपने साथ न लेकर आएँ।
- ऋतु अनुकूल बिस्तर, टॉर्च, सफेद सूट व नित्य प्रयोग होने वाला सामान साथ लाएँ।
- इच्छुक छात्राएँ 200 रुपये प्रवेश शुल्क सहित अपना प्रवेश-पत्र अपने माता-पिता/अभिभावक द्वारा अनुमोदित कराकर 30 मई तक अवश्य जमा करवाएँ। सीटें सीमित होने के कारण विलम्ब से आने वाले आवेदन स्वीकृत नहीं होंगे।

दानी महानुभावों से अपील

इस सात दिवसीय विशाल शिविर के प्रबन्ध एवं भोजन प्रातः राशन आदि पर लाखों रुपये खर्च होने हैं। आप जैसे दानी महानुभावों के सहयोग से ही इस व्यय को पूर्ति होनी है। अतः आपसे प्रार्थना है कि राष्ट्र निर्माण के इस यज्ञ को सफल बनाने के लिए आप अधिक से अधिक आर्थिक सहयोग कराएँ। आप यदि धनराशि के रूप में योगदान देना चाहते हैं तो समस्त क्रॉस चौक/युवा निर्माण अभियान अथवा स्वामी इंद्रवेश फाउण्डेशन के नाम से भिजवाने की कृपा करें। यदि वस्तु रूप में दान देना चाहें तो आप आटा, दाल, चावल, शुद्ध घी, रिफाइनड, दलिया, चीनी, दूध, सब्जी, मसाले आदि सामान भिजवा कर सहयोग कर सकते हैं। आपके द्वारा दिए गए दान से कन्या चरित्र निर्माण रूपी पवित्र यज्ञ सफल होगा तथा आप पुण्य के भागी बनेंगे।

UPI/AC- 2978000100105126 (युवा निर्माण अभियान) AC- 2978000100105117 (स्वामी इंद्रवेश फाउण्डेशन)
IFSC Code- PUNB0297800

आयोजक:

युवा निर्माण अभियान, सार्वदेशिक आर्या युवती परिषद् धर्म प्रतिष्ठान एवं स्वामी इन्द्रवेश फाउंडेशन

कार्यालय: - स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ टिटौली, रोहतक (हरियाणा)

सम्पर्क नं. - 9416630916, 9354840454, 7206852527, 9253726236

संस्कृता: स्त्री पराशक्ति:

"ओ ३म्"

संस्कारवान स्त्री परमशक्ति है।

युवाओं के प्रेरणास्रोत, आर्य समाज के महान नेता, त्यागी तपस्वी संन्यासी, लोक सभा : सांसद

स्वामी इंद्रवेश जी की 20वीं पुण्यतिथि के अवसर पर

युवा संकल्प एवं सम्मान समारोह

ऋषि दयानन्द जी

स्वामी इंद्रवेश जी

दिनांक : 12 जून 2026

स्थान : स्वामी इंद्रवेश विद्यापीठ, आश्रम (टिटौली) रोहतक, हरियाणा



अध्यक्षता

स्वामी आर्यवेश जी

प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली



मुख्य अतिथि

श्री विशाल मलिक जी

समाज सेवी एवं उद्योगपति



विशिष्ट अतिथि

स्वामी यतीश्वरानंद जी

पूर्व मंत्री, उत्तराखंड



स्वामी ओमवेश जी

वर्तमान विधायक एवं पूर्व मंत्री, उत्तर प्रदेश

सम्मान

स्वामी इंद्रवेश स्मृति विरक्त सम्मान

1) स्वामी सूर्यवेश जी, बिजनौर, उत्तर प्रदेश

2) स्वामी सत्यवेश जी, शुक्ताल

स्वामी इंद्रवेश स्मृति वैदिक विदुषी सम्मान

1) आचार्या डॉ. सूर्यादेवी जी, कन्या गुरुकुल शिवगंज, राजस्थान

2) पदमश्री आचार्या डॉ. सुकामा जी, कन्या गुरुकुल, रुड़की, रोहतक हरियाणा

स्वामी इंद्रवेश स्मृति भजनोपदेशक सम्मान

श्री वेदपाल आर्य जी, सतौली, उत्तर प्रदेश

स्वामी इंद्रवेश स्मृति युवा संगठनकर्ता सम्मान

1) श्री कमलेश शर्मा, जयपुर

2) श्री विकास आर्य, जयपुर

3) श्री जगफुल दिल्ली, जींद

4) श्री सुरेन्द्र यादव, डहिना, रेवाड़ी

स्वामी इंद्रवेश स्मृति आर्या वीरगंगा सम्मान

1) स्वामी मुक्तानंदा जी, खेड़ला, गुरुग्राम

2) श्रीमती सुशीला देवी, हिसार

3) कुमारी पूनम आर्या, निंदाना, रोहतक

4) निधि आर्या, इस्माईला, रोहतक

स्वामी इंद्रवेश स्मृति विरिष्ठ आर्य सम्मान

1) चौधरी जयसिंह ठेकेदार जी, गोहाना

2) चौधरी बदलूराम आर्य, मुक्तान

3) श्री जसवंत देशवाल, झज्जर

4) डॉ. प्रकाशवीर दलाल, रोहतक



इस अवसर पर सात दिवसीय कन्या चरित्र निर्माण एवं योग शिविर का भव्य व्यायाम प्रदर्शन एवं समापन समारोह भी आयोजित होगा।

आयोजक:

युवा निर्माण अभियान,

स्वामी इंद्रवेश फाउंडेशन एवं सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्

निवेदक:

बहिन प्रवेश आर्या | बहिन पूनम आर्या | बिरजानंद एडवोकेट | स्वामी आदित्यवेश

प्रो० विठ्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व सम्पादक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा मुद्रक - थॉमस पुलटू एवं मुद्रणालय - ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से मुद्रित। (दूरभाष : 011-23274771, 42415359)

सम्पादक : प्रो० विठ्ठलराव आर्य (सभा मंत्री) मो.0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वेबसाइट : www.vedicaryasamaj.com

वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतेक्यता होना अनिवार्य नहीं है।